







मीअत्राधावणना,क्यां कुरिस द्वा येगी म्या च्राय विस्था प्रमान क्षणित स्थयाय दिममिक्षिण्य मिष्ठ्य मीमद्भार ्रवण्या। निहरानसभेरे दः मिक्किन्देनराय उ लप्टिभिक् उर्रियन्यया रभक्षाः उल्वेश क्षेत्र के विश्व विश्व विश्व के अपने उभूरमभारम् भिक्षवर्गभाउविध्वार्थमे भारतिमध्नेमान्द्रीरस्पिक्षणा उत्सव भवंउदिविष्टार्थे उद्यालम् भाषभद्रिभ म्बिक्र नरस्कालन मध्योदियन क्रीभः चीमक्षारिधः मृत्रभः मीरिधरः हंगी. भी में की की दी देंग्सपार म्बर्गि ॥ मुउपम् ए एउक् मुड्यू क्मित्रिष्म वार्त्यवर्ते देवजेश्या है वी रियम्बद्धमिमा अन्तिरका म्बर्ड विभ उत्रुवनीयभी भ इंगमुगननीला क पिप्तला

विस-

भन्मधिली. ब्राज्युम्द्र कित्रभाष्याप विगलिया भाषने विग्न या इ उनके थड़ एं हु: लं विमु इ अजा व हु म्हू यम् वापा किमी रिनीम, रूभरूभग्नीलारं नयनस्यामील उन्भी अद्रुष्टियस्य वर्षेत्र अस्ति । अस्ति अस्ति । मुक्तकारकुर इङ्ग पर क्षेत्रकार वि वैयाद्ग प्रधानिक्य द्वारि विषय भारती गद्भुगद्भक्यु मुक्त भूगियारिए उभी मीग्य 'उबल्ली भम्मन फवल्ली विगरिए उन्नी। कडुणि किम मुख्यानि वह लगर्डण थवानभावाकार्यानिभावावमिठिरामे. वस्वमुद्भक्तानिभाषानं विभनभूका भी र्येड्ड नम्नकार्य । यद्या मिडिएम नही इसन्त्रभक्षमभू भाद्गीवर्गाद्भुउपभावम् न्यलिनेकन्यमुक्रमानुगाला मुख्यम् य क्षेत्री भाषकनं नगनने, युक्तभानं म्यत

गंद्रभागिभड्डवनि, यणंडी विज्ञच्या री बच्ची क्ष्यिक् याना की अस्त्र मुख्य ना प्रस्तां संस् उद्दिय उडिष्टास्य सम्बन्धन्त्याप्यः॥॥ सुनक्त भिन्न रानक अधि विनि बिनी, दिश्वण्या त्रगीस्मप्यितियि र इभू क्या अ ये कर कु उ चिक्र ि संदूरीविक, सञ्जवशिक्य कर त्र के के मार भ अभ्यक्ष नद्गीरजीरसूवडीरिडिः रहाभाना नद्गकन्तिक नीक्रवनुष्यकला स्थकन्त कल्पन्य के क्रिन्यकी म तः विनेय विग्रुभिग्रुभग्रुभु अधिकनिमा तन्तर इकिटिकिरण, मम्किटिसमीउन्ट, स्वर्धियमित्रा विभवातिः गरामरामुनी गद्गीशहस्पविवादिकः, भ्याङ्गाविरी सन्भ्याङ्गाविह्युभाष्ट्राभाष्ट्रः भएमितिः शिक्ति अने क्रायुग्, सम्भक्ति के राम लिशास्त्रायुक्तं, सरके दाइसंसज्ज्ञधालिश्चविका रिएड मम् विश्वानगणन थडा टेउंसमि हेक भिन रितक याम प्रिया भाग भागिक, अग्राय भाग क्ष्या विकास करिया में कि स्वाप्त करिया में कि स्वाप्त में कि स्वा भर्भनेरमः, उञ्जलभक्तवयनः भयन्तरं भानसः शु पिग्शाउपः भागत्यपागिष्वीष्ठिते बद्धाः अल

नभर्वपुरुष्भग्रमेसकः विसुक्क्युकेष्ट्राप्ति अउद्गुधिली क्यनीय इति हम इति भी तिस क्तिगी, भ्याञ्चथाङ्कशीधन्छ अरुपी विवासिनी। र एलकीः वियनकी इललकी अरिक्रा भेर्ने धभीभाभभाषिः मण्डकि धिर्यमृतिः पविध कलगानु दीविण दीवलविनी, अन्त रेभिर प्सी नुसन्धन्तादिगिकः अरिक्ती। दीयानि भिः भागी हालिक हाला रहस्व नीरिक् राज्य यसद्विष्णी । वस्तिहुं श्वारीय, प्रभगेभपुरे सर्। विरवेशिक्षा मित्र वेशा कि के कि का क्रक्मनीयमां,क्रमेंसी हमभ हता, अहमाहिति निहेणुक्ष युक्त हमार हमानिहन सकला हमभष्टिक सिनी. हगरुप हमभयी हमयरु हगेंडुग, येनिए युक्सक्ल क्रान्थ अध्या ए जनजुरुलयाधकारणीवङ्गलिङ्गाधि भिनी, अनिहराधन द्राधन दिए सह भिन्नी॥ सेड्क अलगरा किस्हु राष्ट्रा वितिया भी इन्छित्रद्वार्यिष्ठित्रिक्षित्र्याः न्याः नि

डिंग

राभग्रह्म कार्य कार्य के इसिक, इस रवार् मगाउँ चरित्र स्ठए श्रीतः बत्वर लाभितु कलाधरुत्रत्र्यकारीनी, धलकुलीर उन्धार विद्वानुद्विकासिनी, भिल्यासिकासि श्रुज्ञामस्थरायः प्रतप्तउग्रेक्षेथ्वि सी ापनग्रभवष्ट्रिः। विस्रद्वास्त्रभवद्वास्त्रीव विष्युवी लीरक अष्ट्रणहें हैं, लक्षु प्रभद्वां वे शिगारिका। यहिक महिक एक किए मां अदके रिभ्रामयी। भन्नारागना हुरानि हुन्यम यो भूरः भारमी सुरियाभारा निज्ञ नाभाउन किनी, क उप्तसम्भिष्डण्यणभाष्यसभ्दरः भद्रभाइ कि उत्प्रिक नियम्भ भू विः भ्वर्धियसंभिज्ञ वज्ञ त्व दिव विनी, सवज्ञ धिय्भेभुज्ञ मञ्जूष्ण माना म्याः मृति मुअर्गक नवकिमिक लग्वरी मुङ मिका मिक भियामाइ गैमा क्वीविकुः, श्रुव भुस् भिया श्रीयाधकीयारानभारका, क्षाराभाश्रम्या अनिश्च सक एक विक विका अड ले इस विनी

भाराभवभद्गत्रभित्री हमूदम्बलीक्रय कनि उन्देशिय हैं। कल्यानिक कथा द कमञ्ज्याद्वितः जिन्द्रक्षीक्षीलनेशकारा भयुरसेस्रकः, वन्मणीयानमुधिउन्भिद्यि यिकाम्याः क्षयभौयानम् विविधामाधा मठीरिन्डा, अधिडासिडायाद्मराहिलाउ धीयसक्। चेंड्डालानलियाभने उद्य णप्रिः, स्वासिनीधीनगानीधीनम् भिध येणगः समामक्र रीट इन्टी हिक्क रिमेरिक कः विश्वाणस्त्रिभाणभ्याने व्यमिषितिः डिलप्अननां मागू के भक्कील क लिक, नि धलार्ड्रे स्वयनाताने सुभजने साला रहते क्रिन्नेइम्विन्द्रवहुत्सध्नी कलम्बून पर्वेच भिभिद्र किरी रित्री, जभभिक्त उरे एक्सिलकाइर्जिन्स, सम्मिष्ठिक क्रि क्लीसिसमेरासः राष्ट्रप्रदूष्टिस्युके किलनिश्चना भाणालिक समुकः धारा दुरापत्रचरा, क्युग्करक सन्तानाना भाषिन

डिस-९९

नेरका, उत्स्यहरूपानिस्त्रितायर्वेश्व डी यद्गनीयभिम्भियाष्ट्र महिनानु । भग्रवमुम्भग्र करिमकली कु ए दिक्, गश्री उनिविन्ति हर्मा भाष्ट्रभा राज्य ाच्चीयुलेबद्याथएं मुक्सनीतिका समगद्री निउधार्म् गरममुद्रिक्याय्यक्। अस्त्रम् य्यार्ड्सियण्ड्यस्यादिश, पुत्रम्युल्ड्साम् मिन्निस नियमित्र हो विषिष्टियपक क अभेग्यमाभाउभाविन्या, नावष्ट्र विद्वारित रिलक् कि लिक कि अप्याभिक्त महाम वणवासारकदरा, कलाकिकालस्मीसिल मीर्उक् भवक् राभगश्रीवसवस्थिति नीव अभागभा भूभव्यभव्यक्ष मान्यक्षिक प्रक नएरएरियाविस्नाष्ट्रनाक्नाको विभिन्न इ. यं वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र निष्ठ के स्थान क्रियाइक्रियाइमी क्राइक्रिक क् ट्रिसर् एवं प्रभागा कार के मनका । उरीयाश्वरणकला चेम्मीभन्या राष्ट्रणामीम्री ग्रमभाषाना सम्माका दिवलंगितिस्नाय

श्रुपिली बलजीउबलभाउमा बहुक्रभद भाषा में उद्देशली का एक के भी श्रेथमा श्वापारी के विक्रिक विक्रम्य स्थाप्य स्थाप्य स्विधि इड् भिज्ञ सम्पर्वी, लेथा सम्क्ष रण्यीभनवीविउप विज्ञासक्ष्वीविचि विच् इश्विह्यमानिनीः भाष्य्य अन्यस्पित्र चाभः मोवउम्म् तिः भण्यस्य गितः भण्यी सन्द्रभित्किया भार्यमीभगित्रिष्ठि इरच्वर, भक्षिविधकरीष्ठि विगुण्यधि कं अपका दिन्द्ध साजा शाला था गुदा अपया निडिश्वनी, अचनीभार्तिनीभेक्षा क्रिया की भार्का भाषकाक्षाभित्तभाग्रभाणकेम् अने गमः योवनिप्रादिनी उस्सम्मिभज्ञ भज्ञान यदान्जिद्दावर्गिक्जिल्लान्त्र विश्वत्र विश्वत्य विश्वत्र विश्वत्य विश्यत्य विश्वत्य लुमिमियिकित्र रहस्र गी। मित्र िएसड्स उद्या भारतीक भपक्षा अक्षा या श्राह्म निक्र ल्यायिशिक्षालयहर्वाः ग्रीलेक् ह्वीले क्सी तेलिक्यीवयालकः किवानीविद्यागा

डि्म.

09

वाक्र विकास मह्भा निर्भाग्यो क्रान्य विकारिः विकित्य स्थाप्ति अवालागी वन्ति नी, क्रीग्यकः त्रम्बणिः अणयिनः अनेमनः राभा नगाथसहायसमहानयरागुगाः समारि शरिशियम्भभुनीभुनवह्नन्। रूपभुन्। रू यज्ञानिकाह अनिक ग्रियाभाज्य विविद्यस्थान्य, वराः वस्यिकः विस्व डिनिक्ष्यिक्षका, जवक्यक् भक्तिस्व असर्गिविक, सभा विज्ञसभा न राष्ट्रिय पुज समिया सयक्मिति एउ विभिन्मिपी िकः पर्वभिष्ट्यीविष्या भूतिभिक्त इतिक्युनिन्याचेगाधीणिवाभिनी भेन क्राण्यम् इपंचाचलका ललका उपन पर्वा भंदगाभाद्व कलभगाविक, अचिदिकेलयेतु भुजलक्षेत्रवरीउसः, गण्यमा जलप्रमा लक्षी विभागभागी। भावभभयभी उपीतिः ज्ञिक्त्राच्या कल्यास्याप्रचार्थार्थार् क्लायडी. अथाधियाचा उच्चेय उडिक्यी भने 2411

भागभेदारिनीकें भे दिनीधा बुन कला, सिध भीवविनीयिक्षेत्रहुनुभुक्ताप्रसः अक्षान्या स्थार कि श्रीति का तिस्या हिंद से भूति चैरमंगुभाना द्विगावाः समित्री च वश्वाचा शस्त्रभाष्ट्रलेख्यः। दुस्याभाउअकाम् हरा यन्तिवासिनी, लिस्यम्नयभाकुरुपार्भ चे गंदी निनी, स्वीनी वील स्पाय का क्ष एकि भिया रण्या एमशीर स्थाप स्थाप उथरः, रलः भंबीदमित्र विच्यापित्र पित्री भचभक्तीभागभयाः निवसिक्तिभयी भूकः, भय गरमानिवाभयोगभी दिवतिनी, सेयगज सम्बर्धयाचेगवित्री, संयोगसापाद भुविगद्द ने किया मुक्त क्राया है रबुर्ड्यु रिंगी, सम्भरश्रुप्थरश्रीय शिव भूसभगित पुत्र अधिन गर्म ने विनिः मिवानया, विद्वलाष्ट्रत्रसक्लाभक्लाभडी नार्विशे कुनार्वे उथ्रया भिन्ने उभक्त भरा दिकः उंभकी लीस्न सुनिस्त सुनिस्

डिस-०म

शिनी, विश्वश्रमेज्ञकल्पासम्बक्तान्थरी, विरुक्त नुरुष्ट्र अंग उध्यविरंभिनी। विष्ट्रभविधाण्डिषुः भवधुक्र भूका भक्तः थर्भपुत्थर वशुनीरम दिस उभूयो। स विश्वेषकलं द्वापुः भगष्ठ न दिक्कलः भ मुनीयवभाद्रस्त्रभा नुगर्क ला उस् । भष्टभा विषयी प्राप्तक लाज ग्राक ला बडी, उपविष्मी उ विन्य उत्तर मिवलिक्षलयण्ड् विडा, भगन्यर युक्रमाग्य क्रान्स विने दिनी। वंसानाया जनग्भागामा अभिवास्या रहारि यिक्षियियिया नियं नियं विषय भूषा दिश्योवअची व राच्या, भनुञ्च न्योव गडिची रसप्तमंद्रप्या अचा विधिज्ञाराल मीकि इचेंड्रभगर्का संभुज्ञमल नेक रमभुत्यन् इतिविकः विरायधिनिर्वायः उ धरमें इविभित्रनी, अन्हि चिलिविज्ञिषे उसाह्य सामित्री हाक्यारियुग्रम्य उस्टिविक भिनी। अदिधीय लहिंगुरमग

13.

किक्गलहेगहुउ क्रिलीवद्वर्थेयु भल सराधारिक, सहसूली सेंदर उपाक्षास किश्नी अञ्च इक्षा श्रिक माधा श्रक पाननभ इतिः श्विः अणनीयागराणक्यथाय ण बक्रम् इभयंभिभभद नुद्धिली सिरिः भिगेरिह शिवाभाषी श्रुक्त निवस्त अन्ति। सेभपवार्थी उचारा राकुउपराक्षा भी प्रिमुद्रपर स्था भाष्ट्र ए डिंग्सरंग है:,ग यशेषमण्डेतमी क्रांभी ध्रम्मण्ड, यश्रां जीविशिवश्यम् विश्वर्गि विक्र. मुधिच नि ए हैं। इस कियों इस भी दिका । उन्यापन स्थाना अनुस्ता रथक या सुर्वित्रा डिस्फाइको क्रिडिक्स लिडा रार्नाभी इत्या पुरन्तान्भु श्रीकलासयी, श्रवत्वण गर्ने भग्गभत्ताभाष्ठ्रनभिमिनीः जनाविद्यवनभु मक्त्राधन्यथितिन्निः प्रकारसभनीस्याज क्राग्या भेल्लभा दिविषेश्व अभनी भभ ग्भाषमविधिः, भाइन्वयववं अम्। भूभ

(व्स-

क्षित्र विद्यानिक विद्यानि नीबाह्य किए निर्धित्य प्रभारत क्येमी हराभानियों, निर्मायागानियानिय जुलवा भिनी। अदं विक्रिश्वीनिष्ट मिन्डरी विविम् उर, इति इ भूषि इ एए इ वि एए उ जिल स्वर्गे निद्द्रनीलपडक्षणविक्याभवगंद्र ला. हलामानाविधिइयासप्डियास्यो. गुम् वाराप्तगुमः भूकं सन्दर्भावित्री कि बन्दराध्रप्रसङ्गनस्य इपिली देव नग्रन्धमयीके लेसानग्रन्धिनी किन्नी भगुम्रुपाग्रमभयानग्रनाविनी क्रिजा दूरराष्ट्रपामित्रकर राविनी, विपन्स नम्मवीसदएनग्रनाधिनी भिक्किणण मङ्गाम्ययपागुमङ्गिली, ग्रामनान्य नामायिष्ठान्य सुद्रियानी, विभलानक न्षाणभारत्वरान्धनं विनी इत्रम्पुम तीलप्टानग्रनग्रन विरीत्सप्टानग नम्रज्ञपाध्यामुन्नम् नर्गधनी अन्वविष्पा

गुन्नुसूर्याने विगुन्त्रक, प्राणुक्रागुरे म्किः शर्वेः की उनिद्याः इनिकारे प्रनाष्ट्र उसरामाधीअविद्वास्त्र अर्थे हिलीअरा अध्येषविडवेंडवः विक्नितिः विक्नितिः विश्वम् इचानयाः भन्भे राष्ट्रयाष्ट्रायः। भवागुना विकृत्या भव विक् क्राया क किण्ण अखर्वेडः, अष्ट्रयग्र निन्याथि भाभागम्बद्धाः नश्मम् स्वाप्ताना हित्रा भा यदेका, विद्यास्त्राक्षेप्राभाषाञ्चीभाषाभा मा स्विकृषभंजन की सकी मित्रय क्रिक भर्मा प्रत्या मार्थ हा मार्य हा मार्थ हा मार्य हा मार्थ हा म विस्रा सीविम्यथर हिंदिः धरानिक्षेत मार्खा भर्कपाइक्मीयस्विक्ट्राइनिङ उषः, भरिएउ ब्रुशीमें श्री है उत्तर एवा कुला गा भाइकलान उराष्ट्री विद्या अन्भी िकः श्वार्सीरमलम्बर्ग न्यान सक्त्रकृश्यक स्विकृतिम् इलकी सभावती दुनिस्ति ग्रे जीयाज्ञ रहा भी चुनी डिप्रकी डिउं। परेष्ट

शिय-

19

ि इसे अपार्य के विकास के अपार्थ अपीर कि की अपार्थ के अपीर कि अपार्थ के अपार्य के अपार्थ के अपार्य के अपार्थ के अपार्य के अपार नंगिति संस्रापितिस्यक रका स्वर्धा मिनवज्ञ नद्रियानी, विश्व जनद्रभग्गभाध .स. यस्निवासिनी से र मन स्थापितियास् नुजनवा के हमनन्यपर्यं उपादिश्रा भुद्रगी। उडुभर्भर्भर्भम्भज्ञं छूनभिक्तं, भंचेप क्राम् इस्ट्रम्यीमीध्यवङ, मिाए विड इक्भवीन्द्र रचविनाभनी मभुभु माउ वसुणम्यक्षम्यकिमी मिनी मिनायाम् अर्था पश्चिमें उरवे वर्ध अब्भू भदिमित्र यश्चिमज्ञारक्वरः विम्रज्ञेवायकेल्भार् क्युमानके गा, मुश्रिके अप्रियं भित्र सनेर्डिक भिनी प्रिपिकि विक्राण पर्क भूग्वविलिभिनी मुद्गीभाद्रमुगीये किमा रीवभूवीउषः वर्ष्ट्रेसीयमाभूशभंडान क्रीडिमंगडिः क्रिनेम्पिभर्कि क्रांयनकरिन्नि, सदादुमाव्यग्रेयवीराष्ट्र येनिसर्कः सवामाअग्यस्भुकद्शिहि क्गेडस ॥

क्षक द्वालक मित्र वृद्ध क्षाली, युप इनकिलीयम्ड क्रालंड पिली, भ्यमक्र्रल इत्त्रार्थिक से निर्मा असे किस मेर्डिंग गं सक्षालद्वाधानी विद्यक्षालय प्रमाणद्व क्राणड्यान्त्र,सारक्राणड्यान्यम् अधिन्त्र मध्यक्षित्र विकास का मध्य मधिन्त्री, सरीगक्षिलीडबीयुद्गक्षलकारिली, धेरुम् भगभपन् भ्वद्दीयुध्मरियः, प्रिन्नोसिर्ड पुरक्ला बलिया भिनी, भचभाद्रे हमज्ञानी मंत्रित्रभुउर हिए ,त्रनन्न अभामात्र उनस्क रिभाषला सन्द्रभयन नहामयन उन्द्रिथ ली, मनद्राणकान द्रवगान हु साहिण स नहामानिनीमित्रियस्वतादिगाहिङः, पर्भायङ् न्उपमानी मार्च भग्ना नी। भन्भार्षि भाषदा सब्भे क्यू इति, सभू एयं वृत्तीभवः भंडाठनकरीउष्टाः अचिक्चिनिभचाक्छ्रन थभकारिली भवाक्षण्य समिति भीउवा, सचस्काना जिल्ला भारतिया।

डिस-

भववस्करीमिंडाः भवभवान् रित्री। भवे क्रम्निक्षित्वार्गित्वार्यार्वार्यार्गित्वार्गित्वार्यार्वार्यार्वार्वार्यात्वार्यात्वार्यार्वार्यात्व डियमडि:अनगर्मयीडयः, सच्छद्रश्राय क्रीसिद्धियाभागी,भच्डमणक्रमीय भवकराजिसिकिया, याउडामाद्रीस्याइसीक क्यासभाविष्, सचिभिविभुएदिवीसवेसन्द इ.एउस्, अचक्रयहर्गेम् किः अचभद्गलक्षि न्त्री, भवक्षभभू अक्ष्मभच मंः । प्रश्लिकिनी। सचस्र भूम भनी सचस्रुविन मिनी, अच इसक्रीक्वी अवसंक्ष्य हारियी। दि भव्यीभ चिभिन्निभूदायसकेलगा, सच्याक्रमीय नित्रद्विगिनीउष्ण, भवश्वनभयीद्वी अवर् िविनामिनी। अचाण नश्चुप्रमा अच्यायका उद्याभवानक्रभयीक्वीभवन्त्राभुक्ति। भिक्तमार्की प्रवीयप्रवीसवस्थिति ए. स उग्रमारमार्मीयवीरियाभानियी। भत्ते गद्रमीम रद्या योगिर्ने उचा वग्रवीविम नीमेंव चर्वी कृषेच्यी उसा, भेंदिनी विभला मेंव मुक्लाराधिनीउस्र अच्छाकि निर्मामक्र भवभिक्षिया

20

अचक्रभभूरूमीमधरण्या र प्रमुति । दिकेलम उन्भायभन् प्रदेशणिकः क्षीवरीक्षणाप्र क् मेमीयाध्रियानी,क मेमीप मुपण्यकार्थ यु महिल्मी,क म सुनी मुनी मुनियम् नुअलया, कुशिविद्यविद्यविद्या किल्या कि लगा, सम्बन्धिमितिहम्ति लाइगस्याः भाषात्र मायाम इ मित्र वा भारति वा भाषा भाषा मन् इक मिड्डिं अक्ति हिंचित निमी सी भ क्रिकेण्डवन दिश्वरद्भाष्ट्र स्वीति सचार ग्रामव मीयविद्यगिडियन्त्र हुउ। थरभुक्षिड्रथाय भक्षित्रभागी भवमार् न रशुराभ्यभ्यम् न थिक भन्मत् सुरीभन्भ दु ग्णभी सुरी उस भव्विष्ट्र मुनारावभावकणी सुगेउस, भव्येगी सु गीमैंग्री० वदापिल वृगी भवक भेवगीभूव उ ईयुर्गमेश्चरी, मित्रः मित्र्गान्नाभागिश्च इ इंगिडिन्न, निधापाइंभद्रभावाशया क्रियुवाभिनी, भचित्रिद्विरिएश्चीयवभागवस्थ सर्गे,००००॥ ५इउइ वित्रं दिनुभागना क उल्मा नप्टिमित्न दरीक नच्युधमित्र

दिस-९३

भन्धरभाउउए असरभाग्यप्रपानि । एउन्भु विदिश्चित्र वर्गे दिनाभाषे , १८५ के ते मध्य वर्गे भवकानगाः प्रिये भवसभू एभाष्ट्र नाम च्रिड्छि,उङ्गिविविण्ड्युविङ्गिविविण्निग, अनेराधराष्ट्रिय दिया विभाग मुनी, परः भेर भवन चुस्रात्तः भवकिमकी महत्रभुभून मृतिय व जिन् वलानिया द्वारास्य स्थानिया स्थानिया वित्रा हो स्थान **6नवरीउस्म्भिःकंभग्रगङ्**यः स्टीउरेगन्यर अध्रण्टंडभूनिर्निर्देक्नो, भग्नद्गः भित्रणभुद्ग भिक्तिम्बर्गिकिः सुरोउभृतिग्लन् कृष्ठम् गड़ाइभी: यहभुक्षिणल निविच सम्भिन्निलः ्र उपश्च उर् किमी तं उर विभवन्त्रों न क्रीड भृवमितिर्वाभागमभनिगम, गरुपरुभयीकां भी, उस्गिष्ठराष्ट्रवडी रानाभ्यपद्मितं वाद्याः द्मभूडं सभग्रसम्भारिकानिनीलपूर्भाति नी निरुष्टिलिम सुलियक मृति र नुरक्षो दि ग्दः भर्ग हाने यह विश्वपृष्य भुवि विश्वित भंभे वे गलने इस भने उस , मन्यू ए स् लि उस है।

राययानिम्भंयदि, भदिनासुभ्वम्गाःभन्त व्याहरवित्ते विधिनिविधं यारियानीयभ भाउँ हरेडी। परया अथना यश्विपद्या भूतिया क्ता, नवर देक क्वा क्वा उभाउउ हु भरेका विडा यदिग्दंभेण्ड्सिन्स्ः स्ट्रिश्चः । वस उर्ध्यात्रभन् लेकः भनिष्ठिणो स्तान इस्मविग्रन्येणभूयाडिनिविडमा निर्देक्त कलाप्टान्यः थ० इड्भड्मभा भदन्यां दक्ष मिरेलाः भग्नुसुर्वे मानगाः। नाश्यस्यः। भाक्षाद्वेद्वपुर्वे प्राप्तः डिवमें उच्नीभीपविद्यांडे॥ अस्मध्रमस्त्रे । जाउभन्महिद्यान नामा सम्बन्धिया विक चार्याद्राः पाद्रागिलक्षिति लिपिदेय।द भिक्तिम अवक्रिश्याहर्स अअध्यार अभ विड्या, अस्पितंक्त्वाचा इक्ट्यिविडिस्ड्रेशीव लः, एंश्येम्भक्कष्ट्रं स्प्रेमेल उद्याहारे स हिकापिएउँग्रुच्यलदेशच्कभम्भा,वज्ञान्य भरेकिपिद्विचित्रेष्ठवनश्यः यहारेगाधिकय हिरापन् द्विवचनभो वलवीदकरोक्त्य

7

शिमा-

भ्रमुभ्र अप्रति है रहे दिना अपर्य सी है हुन पर । भूया चित्रध्रभच धरीई उत्पर्यक्य भ्रेड विना यस्ति विद्यान्य क्षेत्र विद्यान क्षेत्र सक्तियां शक्ति वर्षे भवशक्ति अति। अवभा थथ्मभनंभूचा डिविविकारणें १० भरवि उष्रभविष्यविधन्दरम्भनभा भव्यक्रित्रपद् सभचाडिविविक्रश्लभा ०३ सभग्ना विक्र विस्तराह विविधानमा हमनिक्षार हो से न चिभिद्वित्न' बद्दभा ०३ सउक्ष्येन मुद्दानिस लथाक्निथिया उद्यं भग्नक्षिति । इद्यं ने प्रथा का अभागति क्षेत्रकारिमान मन्त्रहरि,याग्यभ्याग्रिथि उर्दे पूर्व इडः अ विद्वतिशिकक्षेत्रध्याध्या भिका विश्विष्करणये में स्वाप्तिया कर्मा कर प्रदेवीनभाउकीनम् नयेण दिवालिंड हित्त जुनिविकिमुङ्गित्र है विस्त्र भाउँ १०१ भने वि हु। इस माधिन संभ मुदी कि जिने भ

भाष्यारा भुद्धेभचक्त्रत्य । रेंग्डः भगउरोकि इशक्राहिता विया गर्डिं भग्डीभन्ने नाउः था दुराः शुडिः ॥ दर्शभायविक्तरं रारा रा स्युरीसुरी अन्मा अय्यनिक विकेश्वर्यकी दिडः। श्रीलवंभच्छवारंभचभोक्ष्यववन्त्री शुवगरमीभंदिम् अध्विकित्रभिये॥ अध म्पिक्र अपग्रहें भेरभ इश्वाभिक्ष विकित्त व नुधुक्षरः म्रीभक्ल हहु गढ़े ये बड़ भित्रिक प्रविचेगः एनं दियान्त्र तथनं ॥ खिनभः पर भक्तमाधिनेथाभण्डने मिक्यपम्भास उदिग्नस्पर्ये 8 श्वास्यापूर्वे यास् भूभाइविव्यद्धित्वे, भद्धभाभाग्य द्वारा यभाग भाइक्ड्रियिन धिमादिएमधामा उनिराष्ट्रा यमक्रवे नभः मानुप्यापिमानुस्यक्त हिनी ३ रवडीभद्र विस्कृतिभान्ति धिनाति। ने नमः समासाधुग्रपंगनच्चिपहिनित्तीर हिराधालनभभुद्धिण सें अरिण अर्गे, श्रव

निद्यनने सुरास भरूरिश अध्य प ध्यारिश क्रीहिं विस्था प्रापिन ए उत्। नमस्य भारप्य भुवविधामिक्षित ५ धीरमंभगसंहितस्यित भिरिक्तिला क्लिकिडियद नुपलिनि **ठ**वेनभः, रिज्ण्यभन्भेष्ठश्चादिशंभेष्ठउवे. हम्या किया अहम हिम्हित्ति मिवह नव उ हिगाओ क्रांडनभूरिद इयाविए यित्री नमः था भ विचालका थिनममू भी लग्न क भी था यस वस र्ण्णेसचवन्त्रयभेरुय नभःसचग्यसचग्य सचयण्ययज्ञीला ७०॥ वस्त्रयवानुग्यनभ मुग्वगविन, विष्ट्यस्य प्रस्यस्य नुग्र भायउँ ०० ध्येक्षयभागाः उत्तरायाम्य म, नभवाक उसे उर्दे हवासपाइ थिल ०९ वत् लायग्रीसन्द्रमिलिशिड्कप्रले,नभःसेल भाग्ठें विश्वक इभज इने ०३ उभः थण भारी भूयसंचाउपद्रगायाः, तमःसम्भुज्युष्यकः पिल किइडिपिल ०६ रवश्चमयमम्यमम्य क्रिकि । धरण्यायविश्वत् अक्रिरायनिश्वतं ०५

25

हिं उराचिन विद्यार्थिया गामुख्योगिर नभः भ चेस्रम्यभद्दं स्यमस्विक क्रम्यमित्र यायण जक्षण गयाँ, ग्रेम् भी संभायभन मह्माउन्भः,०१ भक्त्रमुउरुभव्यसंबन्धु यक्मत्रया अच्छा यभच्या भमुभवद्गि ल, ०५ उभु यव लाक समुद्र क स्य विद्यिति न नमः भ्रमम्ध्रभे क्ष्यु हन ए शिनी। ०० उसर मण्या जुजिहिती हवहिती, भर्त है। बनाषायहित्रगभुगयउनभः १० मितुराहभूते णयमग्रुग्यामगीतिल सानिभक्षांकराष्ट्रा ज्ञाणक्यनभेनभः १० ग्याङ्गिननीग्रस्ते यस्यम् त्रेचे . युन्दि एन पर्पे भ्रोक्याभ द्वार क्रिले १९ मममुहमुमझ्भातिकारिययून नमभुष्टंभद्भीनर्भीनर्भिलिश्चिम् गिर्हिल ११ विवार वसभ्य उरिएल एक भिने भने हुउ विक ल्यू विश्ववद्यविना भिने 9= हिनिनिधुर रण्ड क्ष्रेकियालस्मित्रिल नमस्भवक्षायथा भाग्म उलाहिने १५ नव्यू टिसमार्थे महिरा

3570

पिलनाषुर्वे, नुभः महित्तरीगर्यके टिविउ य सिन् के भद्रभेद्र सल दूरनु लीवव ना वर्षे चिन भहें सुरायलगाई नभः कारल राच्चे ११ सुन्युलन प्रज्ञाक साउचिव सुभु य नम्भुसु सम्दिवना स्थापस्य इत १५ मझा विलेस पावीदममवंसविरामिन मम्यम्तिरामिध व इनग्यनंभेनभः ९७ स्वर्यसम्भण्यमञ्जे इज्ञमज्ञ नभक्ष्यमध्यमचक्रालक्ष वि ३ द्रभागीउ नल्ख्य क्म स इ भड़ पिल इ भुकचित्रयाना चारिता महिया में १०० धनिभ्रयनश्यहिक्रक्षभण्युनं मुद्रक युभनान्द्वमञ्जाभग्रं नभः ३९ व्यथ्र यम्भूनं हवायहब्हि दिन हर्नं इसया नं इसचएयनभेनमः ३३ मुक्रनं भक्त यथी वर्णियमेशायण्यित् भ्रोगित्रभ्राम्नां दि वश्च विभवतः १८ उद्दर्शस्त्र गर्ले संभक्त है।यह धिउनो यिनिनीनं थरं भूनन न प्रमु ध्कर्मिया। महीकाउम् क्रिनिस्त्व मुक्ति

वित्रां न भिक्रमणन्धन्ति भन्ति विभुद्धन्त युम्मभुस्या अधिक क्लिप्या नियुक् मुश्केक स्थाय प्राप्तिक दिनिष्ट गरिउथ पेण्यापीनिय गिन्डि इडियुक्तिप्र इछन्दियं भ वसीक्रिष्ठ थमुनंभाविणेस्यिनञ्चादेभवएक विश् नशुभंभाग्रभण्यश्विधानस्य विकार गुर्क्ष्यान्यान्य व्यानाम्य स्थान्याः मुख राम्धिमामा मुक्तान्य मुक्ता नकाः नमृति अच्यि डि. भेड्भु अप्र चडा विश्व क्रमरी गर्मेन क्रिनी मारिनी उद्या येग है वर्रणक उन्द्रस्याज्यान्दः द्राविन्द्रिक् रेहिण्ला विभेदविश्वप्यः गलहाभूष्येणायन् यनिकियम अचित्रभूणमीनेयम्भूषा उस्युगी। इडिम्रीभस्त्र निउश्व ग्रेंग्डर्थ ग्राहें प्रेर्भभुक्त ॥ छरणयनकीनियानसुनियासुन्तिनः भर रार्शिक्षण्यीयभाग्धण्ययक्षणभा ० राविक मनुक्रियावभक्त देशद्भुव था चडी

भूलयाक्र चभवगी चल्लायक् १ रायह ले इराष्ट्रक ना हुन निक्ने यन, रणयपीड धुने क्रविक्लडेल्क करा १ लयध विकड्राइ भिउन्न लिभरूगः एवं प्रभुक्तिभिन्न अ एड्याणभूल, एयम्ह सिउभू किन्द्र उर वथवाः क्येक्ट्रोएक्क्रीलगद्गतराम्ह अकि स्पूर्ण्यक्रीवेद्यद्य एक्ट्रायुक्तिय न लायस्त्राह्म क्रियान्य के लाया कविंद मीउं श्रक्ला भक्त मं मूरा, रायगहुन द्राविश्व मरिष्यानी एका एक हु संभ्यन रंग्वरीत्रजी जला लयह जिथ्य वर्ड में स्ति यउसिक्षा डा रायश्च मुद्ध उपवस्ति। उवानित्स, येलयुगि मिपिश्वम् यूगुभे हणू क्लन् ७ एयह कि सम्मू स्क्वियायन भूए, रायहित्रभर्द्र मुभह जुवे रें उँ उधि उ गयर्का दिव बम्भ क्षेत्र व ह्या रायते क्षु मूली मिरीव एउ सामन ०० रायभव्या गानु भुधुभूम् हुजु हे बत् रणया इए नथद नु विश्व अभद्ध श्वर ए यह नहीं भने स्वामा

भित्रीयक, रणवेश्वद्यस्य स्वतिभाइश क्यक, १३ राया रूभ सभा रू जिस भगुकुरी उदा लया वि गीउभेग्वाम गीय भान सुर्य न ०र लया कथा वधाणन यह सहस्त वर्षे रण्यहीस्मदभद्धभएउपचहैं उत् ०५ रण यविश्वक्षयिक्षात्र्यानियाथयुक् लयः म्यस्य गुल्य गुल्यं भावका व्याप लायेंडी केंड फर्सड के उसमार, रायदि यवायाजी विष्णु भूमा विष्णु के प्राथम दाक्र गांच्या विने क्वयी थका रायप्रभुष्ठे लगडीसगड्र कृदिअग्रथ १उ लग्रहनिक् क्रिउदिक्र एसीवरगैरविक, रायभक्तिश होगविका भिवंवसारम १० एग्याए भूनं राम ग्णास्त्रिकारीस्त्र रायपिष्रभेर नाथा उनर्रियस्थः १० एयक धुउपः क्रिस्वित देवनुराभद्र, लय्सचयमा द्राक् छ द्विभृत कुर्राराउ ९९ लयश्चभभू इसर्थण्ड्र इर्डिनिस भिंउ। रणयभूभन्नरानन्तिनेक भेषिरान् ११

35°

रायभनिर्दिश्वेभक्र वलक्ष्यएननः लयहाँ अयनेन नीने इस भेड़े इव अर लयलबंह लान लय लिए साम लिए भाग लगास्त्रभा लग्न लग्न लग्न स्व यङ्गाअभ ए डिए इन्स्ट्रिश्चलं लयस् इसी ॥ ॥ निर्वाइकुवनन्वंक्रितिस डेरिनयन रिचुलणं रिपवी डीर्डिंग नियक्लामाण्यस्य वर्षेश्यवं चर्यका मध्य परिकारः, परकश्व नुः मण्यारं भी हा गुसम् नण्यो ९ कि शिविण उनिविभाग के शुक्र पिन सण्यनपरिणनं, विनभरुभानभाना कल्पिडरंउइवकल्पमा ३ जीविडेड वभद्धार्थः एर्डिटिक्सिवयर्षे उडी, उद्यमञ्चारिउ व्ययन क्षा इन पान्यथयिम म इणुधिविद्यवद्यीम, 32

वियडिस्रिकेड भड़ि। उवर बिक्य कुयू न नक्षान्य क्षेत्रभाग्य क्षेत्रभाग्य क्षेत्र गिरावल्डिपाः, जीभिभाष्ठम् विकिता द्राप्तरभवेल्लकरेन स्तान्ध्रभययश्चि स्क्शुणिभाउतेः १ हाकिक्युभाष्ट्राभा वसर्वथवमञ्चन, अज्ञानिकथयार्थण्या अस्विक्यां भद्रभाष्ट्रिविनेद्यम् कितिभाषाभिने सर दि इवन प्रार्थ यस्पितिनभः, ७॥ नक्षिणइ दिस् पिन्किन्द्रमुग्नेयचे ठवक्रम्भथ वित्रक्षे हेन भेनभः ००, ठिका लिकी सम्बन्धिक मुभ्यामि अभी मुर्गिष चिभसुवायानिविधमध्याउँ ०० भेक्क यंडमभागे यह भागभा करते. अल्याष्ट्रवभाग्याना शिक्रः ।पंकवश्लाक्षे ०३ उक्षिवयभीमण्नभीकंशः कृष्यभूउभी,

उड़•

क्रुन्यंगारिन इस्मवाधिक्री उभद्र सि १०३ थ्कमः स्विन्छ सव ठव र जिभडं रहे. ठ जा नं न उधे नर्भिभु प्रनं श्रुष्ट्र नस्व ०र उसर व अभिमिवडें उडिभर्यं विद्यापः भवारमाव क्षेड्मे येविभन्नविनिजीपलभा,०५ मुफ्भेड क्रिनि भिग्ने कि याम जिलामिं व उ उ ए नवे म्भाभियुक्त स्विश्वः के ग्रामभारा भुउ व सम्विश्वं हव संय भी। भड़े विन सभाश्वर्स इ विषिलं सक्ष का एवसच्छुउन वह्य संदग्नीलया, प्रग्रभण्य भथि अराज्य इन् भूवरक हिंडी एक्का मुश्री हु अपिला के उ भिनु केन उपित्र विलयन ०३ उपकर् क्रियमाभवसकः स्रिवंड अक्षलम्क्रिवंडः, उट्ट विनी वर्णनेमि, वॅडन्न क्रानैः व्यापः १९ सुर मुठवर्याठेनिति रभूना, यनायुक्नभभस्थे,उ नणदुरुभिभंकाले,माक्नुभित्रभवहिष् धीष १०॥ उडिउद्दलभें रवलिय च्ला भेंई वडा। विश्वयण्यम्भणननगरी उन्नेनिरण्य नरंभ मुज्ञाद्विभाग्ययाविष्ववेषु उयक्तिम् या यः भंजा दू मजिप्रवेषसम्बद्धापुर्नभव इये।

34

उस्तेषीयमभुक्तान्य देश्रीय क्रिण्अ उच्च वीराभु नुविष्दु वेरागिक अप दिविक लो भन स्थाक्तिउक्तमक लक्ल र विश्विशीत्उं भयानीविक्षिणुभूयद्यिभक्षयोगीवर्धः असुयान्त्रिः॥ इज्रुभगाइवय वस्रभायवेपवश्भिरभा खर मा द्वाण्यस्वित्र भनगचा डिर्डिंग सिविया। उसे डि रनि कु भएका सिउमद धीप प्र हु था। कू नेयभुद्रमञ्जरकिकालक्ष्मग्राहिस्याउँ, सन् भीविडमेवक नुभवक हुउडु अभेर गाउंची मा इन्स्लाभी दिवाद्य पिवलं विषय है विदः भीताला वर्णहें प्रभाभादि भिर्धिक वृद्धिं संकितः भेग्यम् अविनाभकति उभक्ष मुभे दस्मा ल उच्छे ए।। ग्रान्यसिक्वक्र स्भम्सेभण्या सभम्प्रदा काल्यस्था कर्मा है प्रकृ भ्रमः भ्रमना अण्यभ्रमिति भ्रवेष सभर् यः भर्याद्वारा उसी ।। वः सः विष्विधिरण्य र हिन्न म्यास्त्र स्थित हा वा मुन्द इमानमद्भिष्ट् तुः भूग तुंभकः स्यू ने अक लीक्रिशिक्तांश्चिभक्षांक्च्याः उद्भेशी,१॥

<u> उद</u>्

विश्वेषष्ट्रिकदक्वलाज्याश्वश्वाधारम् । मिधुन्याद्उयाउद्विपिइउ भइ दूर है यउ ने अरुग्रिवायाणभभन्धेभायाभिक्षित्रभुक्त उ क्रम्बेश्वलिनिस्यम् इषिर्भागः अम्ति इक्षिक्या किया है किया है विश्व किया है किया ह ना नित्र निविद्ये विभाग स्थापिक कि उम्में बील । अचार ही भिरिक्त लीव उपिरं यथा प्रशिक्षक उराध्यक्ण असाजान नामान्य भन्नी उर्छ। भचा मूह भक्ष विक्र डिस दि श्रुं श्री श ग्रेंभुडः भिष्ठाउद्गार्थिण उत्रिश्चरभद्य दड्या ॥ । डिमुडिप्रभग्डिम किंचमंविच्चवित्रम् म्रान्थापुक्रभाभवासि अभित्रस्य । संक्रियं वर देव गरित मिन्न मिनि मु रिग्डः विश्वण्ये ठववत्र ठववत्र विभागनः । ९।। निरमंदीनिरण्येनिष्ट्यकिनियक्त्रितः क्यडी विविम्हिड्डावहवरामनः ३ श्रुक् मण्यूस बाइक्टक्षुरुप्यक् क्रिक्श्रपुर्वक् भूमा बीपाम प्रारं, भविदे अध्यामान्यः भवेष्ट्रिः

थिन्कहुडा, यरभुक्तभूरं क्रभुरूम् थण्यन्तन् हैं। इसकेवेष्ट्रं यश्चकं यो ही मैस हु गा राग्य रिविट द्वार्यद्भाः मद्भाषाः, सित्रभुद्धार्यं मिन्त्र कि शिलियनः, राभेश्वरः सिन्द्वचिर्धसरकार्ध क्र रेर्ग्न ग्री श्रीमन्स्मेन क्षेत्र से नर हे गुण्य क्रें , बर्ग से हाडिंदे हवा शीरा लेखा है। एउक भीरेने के रिएउलेडिक्पि उद्भक्ते रिएउदियेरिप उपा डिका शे की मेरेण गाइन के सहब्र उसह यह अस्पान सण्य सण्य नमा अवदः अवलेक्मः अवक्रुः अवश्रीदर्भ म्भगीमेदवाभित्र गरूमेिडअभुकः मभरमः भरमुद्रे नीलक्षंभुयीभयः भक्तनेभक्ष येभद्रभवाभद्रापः भद्रप्रिभद्रशीभद्रां व क्रमदावितः भदादवेभदाकामान प्रापेभदास याः भाइक्तियभदम्द्रभदिक्तिभित्वक्तिनः। श गण्यवविष्ठंभीगभेभनुभव्यभाष्ठः वक्रद्र्यिष् उपकाः सन्स्वास्त्र्यम् मध्याम् अधि द्भारत में स्थान भी भी में में करते हैं। भं हे भने वस गर्भ भनि अक्ति हैं के कि नुस्र हिंग

Æ.

भश्चमद्दिवः उ**धिउद्दल्पे**यस्ति पान्यस्ति ।। विगद्भुउरद्वयनीयराष्ट्रकलांगेगेगीनिवन्तर विक्रिधिउ तम्सरगाभा नगण्य ध्यभनद्वसर भग दे करा नशी भन्य विंह ए विश्वना हुआ ० बामभगियाभनेकगुलश्चर्यं चार्गमिविश्वस्य सविउथार थम्भा ब्लिनविग्द्वरेणक्लंडव वुक्राल-१ सी इं युसे डिउक्तिरी एविक लाभन कल्का अन्तिविम्धिउपाइक स्था नणाविष् वित्र हे भूवक्त अवकार अ उल्लेख सक्तिनि क्रम किडीयभार कि कुथ मिरा यभा नर्देश्वकंभगुलिन ज्ञलभ्यसंयं नर्दि है। मुज्ञिषं कुल्गा अप्तवस्थित प्रस्थित प्रश्न रवरंलिक दिने इथी, अभाद्र संस्थान निर्धा लिथहां वान रेश थाइनन इंग्रिअ अध्यक्ष क्र दर्वनम्भरण्य एक एवी एभी, नगाउ कंद व्याप्त्रत्वभव्यानं व्यान्त । रागिदिहे धारिउंथल र र गर् वेंग्यु स नि न यं शिति

रुभक्त्यमा अञ्चर्षेर्भक्गंनयन किंग्संवगः १॥

अमंबिक्यभविह्य सम्बन्धिन संभाषे गडिंग विनि ण्यभनः सभागे । अण्युह्युभन्भष्टगाउंभ्र मं वन्त्रभभी । ए क्ष्मभी भूते पडिश्वनं भ्रत्र ए द्यानकिष्मित्रीयम् भविष्मित्राचः विद्वान्ति भनभेगरभावन क्रीभेभ्रध्ये दिन विन् उराभुद्धिभ ००॥ विद्यान । प्राथक रामक राम्य सिद्धानि सुनिउपिद्गननियन्थ, रगिम्दावउउउ दन्त्रिष्णयद्क्रम् इनिभडेयनभः सिरं य ॰ स्थानस्मनस्तिभनग्रमण्यस्तिक श्विनक्षित्रियाचिएय, केलंभभिवन्स् इतिबारिङ्शानिक्द्रवादिकाण्यामभः वित्र य १ स्वाधिपद्गनेर एभ उत्रिष्य दे हैं राय्वित्रान्तरहरवायाः ष्ट्राभारित्राभारपरे यशिलमन यहका डिव्यं भिडा धन्मः सिवा य ३ हसाद्वरणहाउद्वासनीय यसिक्ट विकविएथा स्थापिक उंचा दर्शि भववेयु ल गुरुनमभू उच्चर पूर्विश्वमकना चन्मः भिराय मं शुधिहर्सेभरमुद्द्रभाष्ट्रश्चरप्रदेश

भर्भ

इडिभम् मिद्यीयनिविधिउचा कृतक्टकान्य न्यनिगीक्रीउचर्नेह्नम्बन्भिड्यन्यन्थः वि वाय या अंशान्स् हिलागुडः धारित्रुचार्ग्ह धियामण्डाचिभभाज्ञतायः मण्डप्युउविदिर विद्राणि प्रथमा द्वाना विद्रार्थ । विद्रार्थ । क्रमार्क्पि अपदान्त्र नामिया विष्यु विषय क्षत्रवरम्भाग्यः श्राम्ध्याष्ट्रम्भितिकृत्सुक्रान यह वेद्विष्ठथर यनभः मिन्य ॥ मुअिपिमिडभू हो छेग अरु भेव दें कर विण्डा लाग ताग्यकारिविडिकं भ्रमण्यविभाषिद्वे हे वर्षी भाविति गुन्यामग्रेदं हैं ग्वैदं मिन्द्रभा ० भक्तिविधधरणिष्ठम् उत्तरे देशन नभवल्यः ाया श्री उक्त का का के भाग कि भाग नि हुन इस्ति का चिडिदं पुरुष १ अकलिश पर्यक्ष भन्न शुनु हु देश दे विविच विश्वचन्त्र भूम ने श्रावेद विभ न्यार्गितं सहारी प्रश्नितं युक्या अभावता प्राप विदेश ए अए इकेंद्र व इल भाषभवेद भे विक निरिद्ध मिन्याला दिन्दि कि कि कि प्रमाण भिवेदमित उपिक सर्वेद एवं स्पूर्व . यह द

भवलिच्च कंशचे दं भचय शुक्रभी भरे दे भवकते देशनुष्य देशवा, भन्न इत्र नियु देशनुष्य इत् केष्ट्रभा ५ अरुद् अष्ट हो देश केष्ट्र मेन्या, अल्ब्रुक्षिअकविद्युक्तभश्चिश्रदभार्व नभ भूग्वेन अक्षुज्ञेन अक्षुत्र न्यह् वक्षा उला इत्येन गर्थे द्विष्ट्रमें बंदभप्रवृत्ते ॥ नर्दे दिनि क्यान्त्र उद्गान्य हुतः भूम् वनेन्त्र क्तिः एग भइके इविडारिन देशे की विद्या भ्राम इनिवेदन्य ० वस्त्र मुन्द्रित स्वनिव्युक्त श्चरमञ्जूलीव हेन्द्रः मुद्रियादि इपित्रम्मित वस्त्र स्मित्र क्रिक्स मिवदेश व रादेशके नथ्डहेनन्ध्र मन्ध्रेतः भन्य भन्य । का इणि श्रिस्य से ने में दे कर से से विश्वेदली 3 विवेदली, भहरह सुन् मंड्रायिमेद्रला विवृत् नेषः अभव्रव्यक्ति । अस्ति । अस भरिन्डा कि पर्मिन्य है भर्वर विभागरी

व्यास्या विकसनिक से १ सुस्विस्था विस् उनिक् भाषि अवस्वकान निक्षण लग्न रागर यदानित्र रे ।। क्रम्य प्राप्तिक रात न्मजनिया सञ्चरणयुरं भक्षं हत्नभे भू डिभण्नवः। तिस्र क्रिकंत्रद्धंयह पर्वस्त सम्बद्धः भवपण्य हामियले ईभगड़ाउँ ॥ हरें ने कि वेड के ने उस्तिया थुं ना ये निर्देश वार के वि भागतः सन्विक्षस्य प्रमुक्शिक्ष सुद्रक्षिश श्राम्बद्धिलेक्षा ० नभाउण्यापिउपवन्दिवान निक्वक्वयाह्न अर्थित क्षेत्र विक्रमा मुन्ता कर्नु प्रस प्रशा नव्यक्त नव का म्लामन एक नगणिणान्या स्वाप्त्येथि स्वाप्त्येथि स्वाप्त्ये इन्द्रमाउद्भ अधान सन्ध्रनिधिन मिद्राप अहेन महन्यार्थ माइसे अहप्र स्विधिकला अरिड्यु वे असे मान दशके रसे बेन्यु इन्द्रेग्ये न शुरु इक्ट्र उह ए॥ र मेर् नमण्येनमण्ड प्रकल्ड त्रभष्टें विद्यु में सामा स्टिक् । विद्यु प्रक्रिक तिर्देश्य पार्थित । अन्तिनेद्यं निर्मित्र निरमित्र निर्मित्र निर्म

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by eGangotri

नयो प्रें। जातं नसकी निर्मं मार्अवस्थितः वर्षः नका प्रना निर्मा मार्थः विष्णः स्वर्धः निर्मा स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः

अध्वेष्ठनिष्ठभागि अग्रे हिष्टि हि। ॥ ॥ अग्रे क्रिश्व क्षेत्र क्षेत्र

क्लमा न्यं थित्र, कलमाएमः थरिअस् । बेम है। रेशक । दश्मी र रेश मा अधा लिकल मय बिष्ट। उद्विद्धः, भ्राद्धः। वश्रद्धाः स्वति। एउटी सञ्जलमें देशप्राधिस्त्रशैंडमें ॥ यभेर गण उराकी राधान इ प्रमुख्या ।। श्रिक्षा कलिया नः कर्चि धरित उपण्य निवा ग्ण्यमथ सम्भागभगग्ण इयभङ्ग यमनक यभाउमान्त्र प्रेक्ट ना कुल अर्थश्रा व द्वार ज्ञान्द्र ॥ यश्री उठे श्रिक्षेत्रीय क्या राज्य भन् अत्येष्ट्या उद्या श्रीया मुद्रासा यातिका काः। एका अतिकार है याति हिंतैः। नका यः अन्ययः। जुष्क्यभ्यप्रक्रीभन्यक्रायन जिस्थान्यकार्ये विश्वणीनधीस्त्रिणण्ये हार् अः विविद्याद्भाष्ट्रभक्तिकात्र अञ्चलक्षे । भी वर्षाक्षण्या मुधक्यवाद्वाभनः क्योपालाउपण्य नियन्त्रम् नियम् विक्रिक्षित्र हे जा अस्य अस्य नियम् उम्रतामप्रभूके वेउवली न सुनि भ्या भे भाइरण में नुभागिदिक दलकु उन्ने मुगीर भारति भारति । तंब्रुक्वी ए तव अन्यर्भिक अधिक । भूग अभूग स्वार्थ अधीर्य व रूप भारत

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by eGangotri

यानिर्मसंभए हे मैभनर भेड़्य प्रिजान्त्रण राष्ट्रिय ए भूभी अवस्था । हिंद् भरूम या राष्ट्रामा भर्षका मफला मंदीः भरू भारति उत्तर स्था कि । हिंद् भूभी न कप्रयोष्ट्रिय हु भूक ने भव्य कि गाँउ अप्योर्ट स्था है । हिंद मुक्त दया भूदं होती महारोत सम्बद्धाः मुक्त स्था उस्तर मिन्सी होती महाराष्ट्र भव दिनी मार्गि

रूचभाजमाग्यहगराजमा दुर्ग्ने सहपविश्व नक्रमुक्ण भन्क भूमील भगिवाक भगिनु भंगों साल ये वेस अवर समें भारे दिन हुए कर उन्हें भुभक्त मृथक्षरले घडांगं करनी अधिक वस्त र सिड्डिप्सन्स्लिमित्र स्थरग्रामित्र वस्त्रभुग भाउराजी इ इड एक्से किडि ॥ ॥ ह्याः भेडसविद्रभद्रलभष्ट्यद्वीनण्याः भर्गाभ ल्क्ष्री, अन्सितिविवेः क्याग्या निकार निवा श्चिमिलनी दिन द्वायवभू रेड सहस्मा १० मह ल्यम्किंग रीय देव देव देव अस्य वर्ष देव दिना नि यस्यक्रा मा उन्यूषि १ उत्राग्य भगिषिकता अश्रमहर्म एए: नीति इत्यत्म स्थः ४५ त् रालक माहित्या अति रालका सीरामिति शीवा पुरम्भक्षित्। न्याधानभारलनिचंउतिज्ञ डिज्यामा थ्लायभ्रष्टभाभूजीकः सम्बाध लिशाहगुड्डअर्फ्नियाश्चलक्सरलः स्रात्रे हर्वेयम् इत्त राज्याणिया भुक्तमाङ्ग्याच न्त्याल्यात्रभभादिउम्डन्यः न्वायलः भ कृतिडि भिनि व्यायश्याय विकति उत्ति नम्यु ॥ हवरानिषग्रानं सुद्युग्डान्डानं स

yes

उद्गिक्त इर्लक्ष क्र कर कर ने विस्मितिस उर्येभद्भाष्ट्राभभावण्यः ठबाउँ ऋग्लम् कृ विश्वपे डिनाण्यो। रणिसिनिय डिउन्सं से इएला का उन्देश्याने न भरामकिल कुल संभ द्वारामा मानम् हाण्या हा कार्य कारण विश्वास हिरियुज्ञ प्रसामित्र करणा गा या वितित्र ग्रभनसम्बानियम् त्रेमक्षः कर्म्याण्यान्द्रि जित्रिका वस्त्रिका सिवसंस्त्र भवेवाउ स्र रचन उत्तर संस्कृतका उ ॥ द्वीरिश्वपित ध्रभगिसायिधार्मा अवकाः विकासवास्त्र भवि यह अइ। रण्डास्था व । इक्या व इस्था व । इस्था व निरयन मिका विल्यामा अधिभीद्वभागस्य भरवेशकार्भक्रम्भूषणम् भिष्टम्हि रियमिक्षिति स्त्राम् हित्त्रके विक्रिक्य क्वाल १००॥ क्विनक्याभनसीर्वेबक्ष्यः इत्वप्यव्यविति उच्छा की क्षियहर् कर्नथार्य राज्यण्य डिसभग्याभि ७० म्थाग्यमप्यमञ्जलपाउ उँठीमकवण्डवेयन स्पार्थिमाग्ण लाउँ कर्यु याक्रालभाष्त्रभाज्ञम ०९ व र उसभाष्ठ्रकल

क्रीहरूयन्यनः सद्द्वस्यम् अथ्योभ्याप करितरिः। कीद्रविद्याविश्वलग्रमाङ्ग्रही द्रिः, कल्लथः अठ्यंत्राश्रिउंत्रथाभिद्रीद्र्रियां नगीमुविधुसभे इविनगीमुविधुसभः अकुः न भिषिषुभसः किन्निक न्वक स्थाकः ॥ सम धिश्ववैविद्यामन्त्रीयस्य सभः भण्यानन्त्र क्सनान्द्राण्यविश्वत्। यनगैशवनानि गर्नाम् ण यलीलया, एउ सम्म क्र म्लाम्य उपमें भभणवः ॥ स्रक्षुत्रच्चित्रविहित्ति है। खपन जो। सन्ध्रध्यम्भिमाउद्देशमध्यामा मुख न्स्रुके इन्यामकलिकिसवर्ग स्थित लेगाउँच मुजयक भुन्छ भू निम्म ।। नाचि के प्र मिक्थायम यस्स्य चित्रहेथक । १०ति थाय मज्यारें का उद्भागभेड़भाग हिंकित समित चक्रमिक्रियांगरिः स्त्री, प्रयासविश्वक्रिके धन्य लाम् निलम् नि । भारतमा मार्गे हि भाश्चनंत्रीयम्बला, स्वित्रियाम्भुत्तेभक्ष

यंग्यनप्रन्थाः यङ्ग्यह्विध्यि। इक्नेन्स यन्त्रभाः इयं ठउँ ७ लंडु क्षस्वथास्याः। यश्चित्रचयडः भचेयः भचंभच अः स्रयः, य च्चभवभयेनिरंडस्प्रेसच्यूनिर्मः॥भक्षनंहग वाविश्वमङ्गतंगमञ्चलः, अङ्गलंभङ्गिक क्रिभन्नलाय उने करिता यसक्रम्य रणीय उन् मः भवाद्रभविष ज्ञाभभम् सङ्गङ्गः उस्त उयास्त्रभः॥ अरुविधिभुवाभुक्तः भभु किन्द्रसम्बर्धः करुनमहाउसप्रक्रीनगर् च रानवरा क्रिक्य नत्स्वित्र निरम्ल संभयप्त उमा उद्वं अलभष्ट्यु भूमण्ड वक्सव॥ क्राविद्वेनभयाविद्वेशयाविद्ववितिव भा अवर्षे अस्मयानं वालंभक स अरोभे ॥ नश्राभनण्य याल्य भक्षकी भिन्या चला वंसदा वदा भि यारे यालया भिरालं का गिरिया वा अव भव्यभा। किसन्सरंउगिमम्भरायकिष्ठ्रथ लक्षाविद्रभण्या नकीकन्यक्षि

द्रवंबाशीसिक्स्वमरीयशि। था से कि हवरी हर्वे उभिद्धिक कथ भर्ते। कैसी पसुन्धिक ण्यगनम् इन्हिंद जन्मा किंद्र रूणम म्रायवभनं कि विद्याभेड्ड कि सिर्दिनगमा सन्यउद्यं बर्डिस्य के क्लालिशा नशः भद्रस्मीय यसदस्क्रामसुज्य सिक्षित्या विद्यार स्त विश्वित्रस्थित ।। इयम्बद्धाः विश्वेमसीशं भच्छ जनमा । कथ्येवश्ये छत्रामा कथ्ये ना भाग सः। उपंच्यक्षरसेदं द्र्यं लद्भित्रम् विवः धिरहा पिः अरूपि विवाधि होन थाउँ तम्पाउँ । भित्र ति झानक विस्ति उउँ भूमीवर्गम्बन्सरंगाः ॥ कुरुकुमहुः भवितुद्वयं नग्यां क्षम् लाहित्वर्गा युग्न मधंभन्धंभूशलंडिक सहित्रातलं भूभर्ति ।। ।। द्याभिष्यान्य विक्रिक्ति च उन्मन न्त्रिमदिरं विद्विष्ठिष्टित क्रामें गुरू लित्र भक्त भक्त ना अभाग्य की उप्तण्य क्यानियान्य अभ्य स्टिपणिक स्था।।

कु

विध गीडिभक्तयथाविद्यानिभक्तिभ इरिक्षेत्र भयानुस्मान्णगाउद्भन्। विभन्नेदं हवाने जिसे नकस्यअङ्गलः विभवेषग्रहसिधाकिनग्र्याण्य डे। विडियल कर स्थाित साउभा जुलः भटकान (सिरीरेदेप् • १ क उ'क्एक विभागे र स्वाउप स लेंडवरना सेद्र नहाविव केदंभ • ३॥ श्रामिद्र दस उत्पनिकीर्वाल्यमिश्वनं तुर्विषष्ट्वर्वेषः म कालग्रमार्गेम्हाइ विजेशला कीराम क्सानुसंपर्भ । कल्लिया इस्ट्रिय विधितः, कवलं र उत्पानं संच्यान्या अक्षेत्रिकाली उपस्नित्रं भित्रकाकं, मडिस्न नड भुतां भाषा। वर्डियो कि कि विमान के अपने कि से प्रमुख्य है आलेशा किरान्या पूरिश क्ष इंग्रां अहिंश नडिशंबुडभो । अनुरात्य हिर्दिष्ट हिर्दि क्रावि श्वाद्यम्लद्धः शुम्भः भ्रहन्तित्वर्ष्याः लानमुखीलम्बुनिश्चीयुर्गभक्षत्त्रवः भीत्रेशभ्य ०इज्ञभन्नम् व्यवस्थान्। येन्विधरान्यम् वित्र क्षेत्रकार विश्व क्षेत्रकार क्षेत्र विश्व क भवद्गराष्ट्रा सक्षा महत्त्र क्षा स्वाप्त धः भगमञ्जूषकणवासीयनुभेभणम्यान्या । सह

सुवैदिक्ष र र र एन र सध्याये । याह गरे भिने नक्तिषिद्रम्दम्भव वभक्तारम् सेस्यास्भ अस्टित्रां। धोर्थितम्भाष्ट्रम्य सुर्ग्यस्था डा,ध्येरहेयभद्भारे स्तिसंथाप रामिति॥ भर त्री लेकगाश्वास्थित के कार नियम् के कार किया है असार किया रं यत्र विष्ठु पद्मिकुमी, येभीयभू रे प्रतिभृष्टिक उन्मिनदी। उन्भन उड्गिस्सिभूभी दक्ष भक्षावान की में में गुण्या मार्था करावम सिट्डवः भरः अवस्म मुद्देव का से प्राचित्र मार्था अतिक सिट्डवः भरः अवस्म मुद्देव मार्था नगर प्राच्या मार्था अतिक सिट्डवः भरः अवस्म मुद्देव मार्था नगर प्राच्या नगरी अतिक सिट्डवः भरः अवस्म मुद्देव न्त्रभगक्त्रभंद्वित्रक्षिणंत्रके, लिग्रहिति म् भर्मा राम् उन्म राम राम राम साम मा अह न विश्व हु न अववमा युग्या मार्थ उड्डभच हुउ प्रभावित में लवा है में के अभाई में रामिद्दा में रामित के माने माने माने कि के अपने माने के माने माने माने कि कि कि कि कि कि कि कि उला क्ष्या वे के इस्ति इन कि स्था कि इसि क्य मुद्भाष्ट्र याह्न विक्रित्न हो।। विक्रयि अति अते रहाईग्रामानसीला वस्तुवेषवास्त्र से वैक्राली नहींगा। उड़िक सिमाउं देन संगिति व किए। भा भीभीइंग्रेट्सा विश्वविद्यातिकाकः ॥ विद्य दिगाउस्पि हित्रास्त्र स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

अग

मा अपन्तान वा भूषा । १०३ भूता व्यवस्थित विक्रा वर्णिय ठ्याः यमञ्चण्यभाष्ट्यस्वयम्बर्धिमा। सम्बर् गरमर्स स्वयस्त्रभ्रभाग भारत्यथानभर् नगरंगेंब भर्ति ॥ नगरायां नगस्य नगरं केंबन रेड लमा देवीसरस्डीक्रमंडिक्ट्यभूदीरयेडी। नगर विलेकान्यीक्षेत्रकल्याम्बद्धिम्भा धद्धम् । ण्याप्रापास्थर्विषितः॥विधित्रित्राप्ता ॥ कि लाभुक्षेत्र गृष्ट् भलेक क्रमन्भन्भ। उसक्षय हर्मा हर्म हर के सन्। श्रीरंग सन्तर्वाः स्पर्भ १० ए यूक्त के विषय द्वारा भूतिक विष्कृति। नाकारणा भारत्य। संक्रियानुन्मा नुष्युत्भा अर्डियाला यश्चर्यनभर्त्यस्वसारम् द्वनिम् १ ष्ट्रउद्धारात्रायस्थ च कुउ दि उ व ३०, वश्रमु श्वान हेम जिन्नहभू अवस्था देने भ्राय माय्य अलक्ष्र उचन भारत निर्माद पुरुष्या नगर्भ दं य वैनम दिविक भयाग्भयः वज्ञाद्वायाग्यमः नभसुष्वायायाधा क्रियं क्रियं विश्वया विश्यय विश्वया विश्वया विश्यय विश्यय विश्वया विश्वया विश्वया विश्वया विश यहँनभें। अवकण्डनप्रायुम् रायुण्यमा गर्भा यविश्वार्णया व भूक वृश्व दे तरे। भीउ भ्रम्य करा यद्यानुग्यनभन्भः। भिद्वस्तिविनमानंदिउङ्ग उच्चत्रमः अज्ञान्यस्य मस्य स्थाप्य निष्णा

व व्यास्त्रभाष्यभक्षा उपन्य व नमः प्रसञ्चा अपन्य नभः भी वहणानां नहीं शियाचार रायह उसी स भक्तियात् विक्रमण्याच्या भवाद्वीयन्थे सुत् । भ्रमी प्रमाभवीत्र श्रुका के विकास के अपने के दिन, सान्यो गरमां स्थायः कथार समार सिना द्रः परासनः अयुगार ह्युरस्य दिलेक्राण्य वः म्यक्तातिवादि इत्यकः मार्थाः किंग कम्मानीई क्रणाउबम्बा उक्त शीव रहेट इः थीक् विवश्यान्यः चम्यान्या सामा स्थादिनं हतिरहल, इथवन्त्रक्तस्थ्रमत्यास्य हास्य स्थितः उन्होंना दु शक्त है भारत संक्रमण निहार है करते न उपाइनेभन कार्य के श्वान ने हिंगिक हैं भी बन इंगनाकान्या इंगनक मार्डिकः। उद्देश्यकार कंभन्भभुस्यक्षमाः हिद्युनिग्डस्ति। उहिन् इष्टक्सन सम्लाभ्यम् क्षार्थक स्वर्थना वहन हरणार्भे व इक्लाक्षिमी ध्वाना अव्यक्ति स्वाप्ति । अव्यक्ति । जन्मिल्लानाः भिरम्सः मभस्टरस्ट भः भथान नहा पुरस्थी क्रमभव प्रवेस करान भ

अउ

द्रारं थणिया कड़ों वण्यक्त वन्मे खुडि, इडिसुव प्रिये करें गरा क्षा नगर्यां विक्रभा यमनिक नगर् उत्पक्त मा अ उक्ले द्वेरे प्रमुर्भचिक्वियेः मुयुन्रेणु में सुद्रियं मण् अवाग्ना भा भेडिक पह विदेशियां भेपर नगक्षा लेखां में में पिति हिंदी भानवः। गडिता मंभु नैयह स्विधिक मनः । हार्निहें था।। ग्रम्भक्ष मृत् हल्केन करहेक्स्ट ॥ व्यक्तिकार हकति. एयुक्ति द्यक्त्यः यसवरा द्वीया यूर्भक्तः भीवानीः विकार्त्वे, भारतेव, महत्तिभाग, ध्यु देव गहता भू कार्यकार विश्वास्त्र के अन्तर संग्रं बे.महेरा, संस्थित भारतिशः वर्षाव्या, यह नुविद्धः द्वार है। अहिन्द्र वा उत्तर्भागाः । द्वार वि राभागाना अल्या स्वास्त्र विकार का प्रत्या है। अल्या का सामा किल्ला हिल्ला वि. वि. वा. वा. व. व. व. वे. व भा किं, ती. ह. पार ही, कि कि इच्छा : ववय द वह, विश् र पुरानि, वर्थे, निउरिक द्विणक्, नर् ३ विरुद्धि क्षित्रीराविति धण्युचिवित्र हे द्वाः व्हण्याः वृद्धितः क्सविवस्त्री हो इ. उद्धार्या अपन्या खाउ विद्याला है। यह श्वाना दिन विकाश हर्दिय वृत्ती कु ४०% वि मु: उद्देश दिन श्रेश अल्पाल दिन सार्थ हैं के क्वर वे सार्थ हैं।

भाषी है। है हे इस क्षेत्र सुर्वेदी जा मा उत्भाषी होता है। इस है रष्ट्रपंडामादाउत्भाकी विकास है। हरू ए स्वर क्रिके अत्रास्ति। कु कि विभागा नी का निर्देश दिस हम यह निर्माण ह सी है। विकास विकास विक्षे . राष्ट्रि हैं स्वापा मा वि विसा वर्षा ए ण, जप, विद्वां भारत जिल्हा मार् मार्थ मार्थ के विवेश के व त्र.यु.मणःत्रं, ए ए. ए। श्रणः महाही प्रदीत्मति, गः श्राप्तः गृहः भरः भ्रोतम्भः मन्द्रः च ग्रणः निरु, निरुष्यः हन्द्र में हुन्युः भरः हः । हिः मन्त्राः अम् नेत्रं स्थलास्यः क्रिंसेव्डक्रम्त्रीः स्थितिर्यः त्रमहे. वि.हेबिवि: दवि, दिम, किन्न, दिम, न्यु, रूपडे, न्याप्त्री। हिति.सात् मान्याम् दिटायमे म्यमभूतः भन्नभः ह्या हिति। भ. उ. अ. ज. च. म. नेक ने इं. मच्छकं, के अड, द ए. अथकं न्त्रण्यदं स्मान्द्रनेकं,वि.इ.उ.स्,भाव्यास्यातीवावक्, अदा भरागः, वरः, वर्ताः, भवः (०३६, गवुभः तेववनः विवृः सहः, भराः करिं ही अति अक्ष महाल्या तता करिक क्ष्या । नुउत्र हिक क्रामः भद्रामः मि. हः मामानु हः म्रावी वान्यां साना में भागा रेस. ति सुमेर्य. मेरा, एक वहा अरे का का मित हा माने भारति । स्वाप्ता स्वा रक्षेत्रा ६३.क. १०३६.संब ५८.१० अ. १०५० मा अत्यानी । अत्यानी विकास का अत्यानी । अर्था निर्मा अर्था निर्मा अर्था निर्मा रेडवार्च डि.म्.म्. इंग्रेंग भाकि के ता ना मार्थ है है, का भार भाग पट्टा मेक नामा अमा अभा अब अति गर्व गर्व व्याद उत्तर भिड्डा सक्त कि भिद्वा । अया । विद्या । विद्य कः गृहे कि अक्षे क्षेत्र के विश्व के विश्व के स्था हर् निहान स्थान स्थान हैना एका वास्तान ने स्थान है। वास्तान ने स्थान स्थान है। वास्तान ने स्थान स्थान है। वास् नः नः इः भे तदः, वद्रनाः यक्षन्। यक्ष्रनाः यक्षिति दः नः

विश्व-

यावित्या राष्ट्रा ग्रहामान्ना प्रभागायुद्धना याराका बिद्धिः मुख्युष्टिः स्विद्धः सुण्यः स्वयुनः स्वर्ते । सः स्वरुनः स्वर क्षुद्रम् इत्माद्रिक्षद्रम् स्वत्याः क्ष्यान्यः क्ष्यान्तिः सम्याती अनग्रदेशिय यह दीर् प्रमुख् हाई। ब्रह्मार् ता न द्रमा मुद्दे प्राचित कर्षे प्रवित्रे ॥ एक क्या क्रिक्त भविषि कि कामा पि यात्वाता विदिश्याया कहा चे ता मे उप की, के, क्षा की, ए, ला, भाषा, है, का, का, भारी, हिंगा वह के, नुवःस्ति भूगाः, इतः भवः प्रवः भदः भवः भवः विकाण्यः साम् मादं यदं सवज्यिन्यति उद्यामि॥ यानीरानीति, उध्दें विकास डामडमदस ने देंभ, के गर्वे कले मुद्दें श्चरु व्याप्त कहारा या भामा माम व.मा. ५ । अ.मा. व.मा.मा था। दे। रे, इ. भा. व., व्यक्ति, म. में, के क सर मंत्री, म क्रक, चित्रियो । श्रम, मेडी, करें के की। भर, युन, एउ, भटे. पहिं अएए. पर्ने क्व दान स्थान है। दार दार से वह है मरहाराम्य जिल्ला हिर स्वति । पर्म ०९ वधना द छ । स्वाम वरिष्, दिवक अस, भवने अभरं अक अख्यो भवरती म क्रियंत्र सुर्वेत्रकः देवरहः । महर्या विदः हेरे १९ भएड यभागः, दवासाम्भवं, नभहवहः ॥ मिड्डं। यशे पुपविद पानकी सर्वेद्वार विविधाः क्रिया महित्य क्रिया विविधाः क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by eGangotri

युवन्नेक्उछलं द्वार्द्ध था

36

विक्रिक संदर्भ विकास कार्या दे । या गाउन में भारत है । हाता का पाना वाता है। पाना है। पाना है। पाना है। वा वि में ही। इ. ता का पाना वाता है। पाना है। पाना है। वा वि में हैं। माना वि.स.थ.द. हि. थि. है.म्.हे. थ्र.स.इ. अक्टर, हो र.मुक क्रा.स.स.स.स.स.स.स.स. व्याप्तिक्र क्रमाया न.पु.ल वि. नम्भुत्र, भावसुर, न्.भ.न्. ५. भंगा हक्षा, नमहरूप, लान स.रमसुन क्रथा शी.रमेह, वि.न. गु. र. वि.ह. सामार्थी उद्देश न, बंगसुष्ट, दि, पच, किल, राज, तमेशुन, डी, विक्रा ति, एड, छ, चमे अग्रामा, विराविधा, सामा, त्रेगा, रमक्ष, सुन् हु, छ, दा क्राम्या, ह. यक्षर, ह. इया द्वि. मू. इ. ल. म. ह . या नमे बस हिन्द्रीता क्ट. नम्स् दमाउपा नमेश मुक्कि अहे. भन् तिन्दा न मक्षा अव अव अम्माद्य हैंह । श्रमा विक रहे अव हरा नमञ्चर प्राप्ता वि. म. द. इ. इ. म. मी. है। थे, मुझे द्राउद्यात्र उद्यास्य । उद्यासि । उद्यासि । उद्यासि । उद्यासि । उद्यासि । अस्ति । अ उद्धयः इवेक्निक्रीसी नगक् , इद्धः इशिश्र्वाः इद्धाः इद्धाः सब्द्र स्म अदे ! इस्. ५ ? १ । भर हिंद ? १ । । कि स्मा बार्से । उक्त मान्या विकास के कार्य के किया है। अहमिकीउया मुभेष्रवस्थी उद्यः उस्य दमने दिना विक् जिल्ला हो महाराज्य कार कार कार कार होता है। भड़ार वाक्षित । उद्देश स्वाप्तः भ अन्यानि एउ । इदं , उत्ते, उद्या गरि विद्या उद्या करेते. लभू श्रीपः भन्भ नथा प्रभाषतः उद्यानिमाउद्यनः, भाविश्वः क्लीनास् । मिटः

क.

अनकः अभागाना क मु, वे.पं भामामु, पूर्व स्ट्राई, रा वडानाः वित्रकातः । वडाः प्रमाः अन्यः वड्वि, अनेकः अग्रः अपसुर्द्धः प्रिष् भचेड.उद्या राम्यु केर्टी एडस.उड्ड भिम्नानि, च्छि. सारिकः, इन्कः, बन्धः भिः निर्वादिः, निर्वादिः, गुलकोः सुनुञ्जः, मण्डिन् स्त्रे, सुपमार्थः उपम्यः, क्रवण्डः, भोभः।यभः सुद्रः, स्वितः, भेभः। वरिषः, द्रविषः, द्रः, येकानिनः, अन्तर्भ, लिशिया, मूक् माडि, भथा, वस, पनाद्धा भद्धाः कुं, कुं, लेकि, गणीं, गमीरुं, द्वारा कि के।उ. सं भाः उ. भ. उ . ल दे . मेना भरः उद्यः महम् दिः उचीगः . युगम्हः मः अयात्रहः, व्यक्तः, व्यत्यः, यादः, वरः, वर्षः, क्रिमः द्वतः, खुलर, के नहीं, द्वारे, विश्विष्ठ, इंडबर, दक्क उसे भड़न. ्रक्तिया अस्ति हिर प्रत्ये मेर स्थित अस्ति स्थाप अस्ति स्थाप क्लाका लिए कि विद्दा उत्रया इति विभू तिन जिला क्रिया है श्वासाया वह, श्वाद्भार दस्या जमारः वीमादिन भारती चिषिद्र , शहुमान, भद्रपः, पाहुन्म, द्विन् मुन्द्रप्र अर्थः व्यक्तः अपन्य सम्मान्य स्थानिक व्यक्त, उन्हें अन् स्वाचित्रा । विकास के क्ष्मिन के स्वाचित्र । विकास क मुक्ति, असम् इक्लावः यः दिन्ती एका में त्विति सार्वे उद् विज्ञानिकार्यक्ष उत्ताचाः महोदनं बद्धार विक्र क्षेत्र के वि किएमुडीलक्रीयम्। उद्गीपन्थं मर्गने सम्मादं बर्डन समार्गन्य हैं हार प्रदूषि अन्तमक दिन्द्य, उन्सभित्रणविकाम्भाउत्स्वतम् इन्त्रभ भिक्काचार्रः, इभक्ष्यः इन्ने व्युक्तम् वाम्यवस्त्रक्षेत्र्यः समाप्तः स्त्रहेन्द्रेत्वः राईसंग्रह्यू जी सम्भन्दु॥ इस्था मुक्र मुग्नु हु खिल दर्गा। भन्वण्यः द्वीरस्यः यग्ण्यं भभन्तः अम्यभुक्त्वनक्तिभक्तिः एकः है हिंद्वः प्रत्येणः, जीभूतः स्थान्यः रुद्धार्यः, नाविक्योवः, नवीषः, जीनन्वः प्रत्ये अहरः, कालस्याधितहरः, विमेक्ष्ये से स्थान्त्रः, क्रियक्ष्यः वहन्त्रः स्थान मारम् वड्न स्थलनाविष्यः भासद्युस्व मार्थेशदिन्स् इसः, क्रिक्सः अक्रम्, भईस्, भडक्म् विद्याग्यास्, इक्ष्म्यः क्रिक्सः है। विक्रमः अक्रमः, भईस्, भडक्म् विद्याग्यास्, इक्ष्म्यः विक्रमः व्यक्तादः भ्रम्भार्य अध्यम्। ॥ सुकाद्वं । सुकाद्यामिकनं मुह्मी है ડેચનિકને, જારુનું દેઉષ્ટર ફિફ્લાલક જ મને, ભચીક સ્માર્ડિસ તે. रीक्रानहुईं, नीनकेसपुरंभक्कें इंथ्यानंभदनने, वहकाक्रनःगनः 🖟

विश्व महिक्यां स्थान के स्वाप्त ्यावक्रीलिकमुक्कारुः सद्दर्भाष्मश्रीः शिवुद् ्यावक्रीलिकमुक्कारुः सद्दर्भाष्मश्रीः शिवुद् विकार्षाम्याकाः वृद्धर्गाः विद्वार्थः मिन्नाः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः स

उचिनः अप्रमः गर्दुभयः विद्याभित्, वाभरः मृति, विभावतः क्यू, रामान्य गा। भवभाव। कार्ये, भद्य: सभ्युः स्वकिः सन्तर मेरी क्वेस् क्रियुर। पर्दे भरपे भ्राष्ट्र, भगष्ट्य अष्ट्यनं, युष्ट्रानः, अद्यनः, क्रायः, भरेदः मैं मर्थे, भद्रमें के जीड़िक्ं, एड़ीर्यं, भद्रेड़ीर्यं, गर्मं, क्रुनं, श्रीन, क्रित् युल्डन, मडन, भंगन, की एकि किनके। ये बार्ड श्रुमण्ड स्मिन् इस्ति। क्रिक्षण वि. भद्र, रश्च, मर्द्र विकि थर, मो बहा वर्ष्य युम्य क्रिक्त वर्ष्य क्रिक्त वर्ष्य वर्षा वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य वर्ष्य रुलां, मुक्यं, मुधितमुहिद्दं, वह, वक् रुगः वि.व. उ.ली.स. मृत्यः या गारामि।के,मार् प्रति, कले विश्वकाले प्रश्, बनावन कर्मनी मुदिश्न अन्द्रनी अन्द्रन्त व्यीत्। देवात्रुक्त गला शिक्कि विद्यात्र मार्गे वर्षित अक्तान । सर्वान पवडन वहार्म नेवाइकी ह्मार्डा देवपद्भीः देवक्ष्मा देवना वर्ग वर्ग वर्ग । यहन या हुने। वहक्रमा हमें हारने। सम्बूश्नी उन्ने। भर्दे। रहासे। युगरी किक्तरीन। विक्रिजीन योगन्न। उरक्न । रीहुन ने इं । भारतिकान भर्यपंडालाना नकाइना नकाइ देवडाना विस्टिकना विश्वंभास दिवायान क्रियमन । विकान । त्रियमन । त्रान्न । सुन न्ना विद्युनिगर्दे विभिर्द्धा लाभद्दा याद्या, अन्मे भवद्भां विद्वि विद्वि भनक्षीन ने ने किया । स्विधिष्ठिय ने ने प्रवृत्ते ॥ धर्मी

विस्त्र

गचर्त्रमः वर्ष्णलये एक्पण्याः ११ वृद्धः अस्तरमहेन र्जिः मिर्थेने: विरोधः दर्मन कर्मन अस्प्रमास्य अस्प्रमार्थः ग उद्देश स्त्रिक्ष, जुउचक, भिश्चित अर्थ, क्यू व्यक्ति स्थादे स्वर्थ वियभुज्य, जीयुं अवे. अ. भण्युः वि. विषण्य विषण्य ०३. जीवे भनवस्या वलक्षण्यकिम् २००। मध्याद्धराया भवला वलड्या उम्भूत्या दिश्लाया अनिश्वलया महक्या गर्वक्या भर्जिक हुः १. अपुरुवन्तिः १. भूतीवर् . शुरुवन्य मुद्रि । अनुष्रुः भलदः कर् त्र्यः त्रिः क्रांति क्रांति स्वारं स्वित्रित्ति हिः स्वित्रित्ति हिः स्व नवर्देहः कामूल्पडरा भन्न गुरुद्द, महस्महुबन् कर रहिता ञ्चला मुर्पेश्वत्रम्भम्मः स्टिन् मित्रं मित्रं मित्रं मित्रं रचीनी, रंका 58 वर्ष हमा है वह प्रया असे विकार देवा गञ्जाहाद्विः भागः विद्यः देशः भगीः त्रधः वदः वश्वाः नेधाः नेताः वण्यकः वण्यक्यः भाष्ट्यः वनग्रयः भभण्यः अदः सुटिउसः हिउ श्रदक्ते अधिरः अभिरु विक्था विक्र एक् इन्द्र र त्याया प्रश्नी है शुराचा, मुप्त ब्रक्त अवक्क विक् मता श्रुष्ट कर हुव वि ड्री, खुर, वर्ग, अन् मेर्, महामाना नित्रा प्रमानित्रा सम ंद्रकृषा मुन्धु, वास्त्र, यहाः वद्मपारपमा मुदिष्टा वदः गठ भिना हन अधि हिस्कृत्या पह न्वा उपना हस् अप दि सर्या अक्षे अस्त्रा कृत्रे कृत्रि श्रिता नामु । स्त्रिता स्त ना निभद् भन्कः दीक्कः वन्ती वहुः हर्मः मीनः भन्दरः ान्य विकास क्षेत्र या भूषा क्षेत्र क् भ्रम्भ, स्वामान कर्या राज्या महा महाति । उद्यक्ष धन्य, श्रारुवा, माइउ। उपकाश्चर्या उस्य, मडभ मद्भे ॥हेत् दक्षय, श्रारुवा, माइअ। अपहं स्थालंबार माइयादिनालं समे भीरदंगमा हुई: मानि अपना देश वर्षा वर्षित हो यह व क् असित्र वर्गा कर्म कर्म किस्से वहाउनमान पुरा है। वहाउनमान पुर है। वहाउनमान पुरा है। वहाउनमान पुर है। वहाउनमान पुरा है। वहाउनमान पुर है। वहाउनमान पुर है। वहाउनमान पुर है। वहाउनमान पुर है। वह क मिनार्य मिनार्य क्षित्र मिन्न क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र क्षेत् उभगेडिसिअप्या के इंग्लिन सह ग. मुयार्ग में मुदं पियं हैं रा चैंडवर्ग व्हर्मन हैं बेममार्च मस्तिमलभी, सहस्र हैंने

र्षे यव विभावने । अध्यास्त्र हि विद्यपिउच्या । १ । भारति उत्य दिसः अत्याक्षेत्रः व्यानः एक्ष्यः भागान्ति। उत्तर्भक्षेत्रः स्वान्ति विश्वित्रः विष्यः विश्वित्रः विष्यः विश्वित्रः विश्वित्रः विश्वित्रः विश्वित्रः विश्वित्रः विश्वेत्रः विश्वित्रः विश्वेत्रः विश्वेत्रः विश्वेत्रः विश्वेत्रः विष्यः विश्वेत्रः विष्येत्रः विश्वेत्रः विश्वेतः स्वत्यास्त्राप्तः सद्भावत्याः सद्भावत्याः स्वत्राधिदेशः अ स्वत्यास्य प्रमान्तः प्रविक्तः स्वित्रित्यः स्वत्राधिः प्रसानि स्व सम्बद्धः प्रमान्तः प्रविक्तः स्वित्रित्यः स्वत्राधिः प्रसानि स्व सम्बद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्याद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्याद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वत्राद्धः स्वतः स् लेखा कि एवे निवद , दहें भी अड्ड में विद्यार विकास के कि में भारित्रा वेश्वनदार्भिण सीहित्यस्त श्रुष्टवाश्चर । हमीय वह हिस्ति भूत सम्बद्धाः भू अवस्थाः प्रकृति । विद्यान सम्बद्धाः । । । भू यह ना विद्यान । । । भू यह ना विद्यान । बेदर्ग, लिक्नि, गहि, विद्वति। विद्वान, भिष्टेनुक्रिक अक्षात्मा स्मादी। कुरि। दानी भी। वेषु, विषे । हिन् मुक्ति छए, मायुन्त विष् र एये। वृश्कार । ११ विदंशिक्ताना मन् विद्या क्रियान क्रिय विवर्द देवर प्राप्त में विकास क्षेत्र के वर जाए। में अने के कर जाए। में अने के कर जाए। में अने कर जाए। में अने विद्रें वें नम्किम कुमारामित अ० इ सपु व्याविभिद्रेष भभ प्रविभिद्रभी।। 11 45611

143.

मुरिम्किकाणांयम यानसूया व्यक्त सचाविधु न भर्म वभी भर्मिक इह नभूउनिरुविश्वी भक्तियः एउ चिति विषाः अचाजएक्कएक् दिवडी उ य षक् मे द्वधी इसे नर्निथ विगरिति इः उम्बणित्रवस् विज्ञाम क्रिनेठवेड नाने भारित मार्ड वरणी वत्तान् भाष्यः पुरुविधार्भेद्याभवत्विष्टियवा०० ्महन्याञ्चीदाउभदाइउ सं हर्वका सिक्षा मिर्गिभावमुः । पार्ने हिराग्य उन भशु ३०० । पार्ने भावमुः । पार्ने हिरामिषु यभभ विद्या । पार्ने पार्मे । पार्मे । पार्मे पार्म चभाद्गीस्ड प्रेडेड्रे अक्ष हैं हैरा भण्यनभा ०९ वनमृविद्यानिच मुक्तिभाषित्रवृत्र उपाचि दिउसा ध्रा अपूर्ण में स्वा प्राचित्र १३ भारति मारवागानग्र स्वादिक शित्र विकास के प्रमान के स्वादिक कर्म स्वादिक स्वाद पाइक्मिपिधीरान्य अयद्भित्रः

मुके

वश्युषाधिक के में दुई वह वया उउ है मुझानभागुरंगुर्हे विविस्ट उन्नं वदा ०५ भद्रभवग्रीश्चात्रभवद्गवहाभाग वद्वा वेबावसम्बद्धानु अध्विधवा के देव द्वियभने इद्विप्रति है विलक्षण गर्म जिसादिन विद्यार्थ गरा वर्ष का हो णडि कि व सपूर एपरीव विवेकिन नभा म्युड्यू क्षणवर्णविववशास्त्री अस्में उद्देश विद्याद विद्या भी विद्या श्री कीयाज्ञिषवत्रज्ञेश्वयनिकंतानाड्य ०० ह दिन्यगुणक्याष्ट्रभन्भिन्नध्यानि मृष्ट शृतिवेकेन मगने तीन अधिव अंश र अन्मिया विः क्रु द्वादी निमाद्व नि क्ल्यु विभागे अस्त्रे मनना दियस भूत १९० रगेड्ड भारतः वर्गिक्डि भरं भारत्रे थयभ्रेनाभुउनम्बङ्गानुनः १३

थक मेर्डिंडिय स्मेर्स्य दिष्ठा भ्रतंतः भ ब्रियनग्रिनिय्नार्यः १३ अपूनः अब्रियं मञ्जू चाडिविडिश्वमा भंगेम् म विवेद न रण्नाभी उन्तर वर्षेत्र वर्य वर्षेत्र वर्ते वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्षेत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्येत्र वर्ये क्रिकेचिचर द्विति स्मीवभुउड्डभष्ट्र कड्ड इस् विभक्ति १५ रक्ष्मभग्वकर्मनेष्मिक सुरुष वद्या नार्वलीवः भग्रीक्षेत्रक्षविद्यान हनेज ३० वस्वरभयहर्के वस्त्रीनी है या लिदि हीर्पेभएकिवस्युर इस्वावर्ध उत्रा भ्रविषयाञ्चित्रसुर्विष्ठ्रथउद्याद्भरः य क्षीभश्राष्ट्रायसाभग्ने अक्ष मन ३३ वि धियनिषिनिपणीनि । निर्मे क्टेंहें भए कहें ली क्यूपरभण्ड ने '39 अतिहरू मगिरिक मृंबद्व पव इत्था एउई लडा भविष्ट्र कड़ इसे अनियल भाउ कड़ ह्य त्रमण्यक्रक्षक्रम्नयग्रयः महिषि धर्मेः भद्गिनिविद्यायाया १० नभन्भु

नेतृ.

त्रमें देशकार्य देशकार्य देशकार्य हिन्दा मुक्टिरिक्षिमाभनाग्रा १३ निन्नि निर्मे न्त्रितिविकलिनिगान्त्रनः निर्विक्रिनिगर्क विश्वजिक्तिविद्यनः ७३ मुद्रभक्त मवद्भव दिग्र ने उमुद्रः सर्भाचभभः मुद्दिनः भंदिन प्रलेखनः उट विश्वप्तिवश्चेक्र भाष क्षेत्र र भवयम् सर्द्रप्तम् वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे । विवादिक के स्विक्त विकास के स्वादिक के स्विक्त के स्विक्त के स्विक्त के स्विक्त के स्विक्त के स्वादिक के स्व विविद्याद्यम् अनिविक्नोविल्डोर्च्यः छव यदक्रमदानं उसन नुभन हती : ७१ अई हरणीय नंद्रमें स्विनाष्ट्रियाभूषीः हावयहिक्सा र्भेनियलकसर्वद्भर ३३ हुव वल्ड किक्स वंविष्यभगमाविज् भविभक्तियनम सम्येणविष्ठित ३० इहरहनक्ष्यहरः भा महिनिव्हें भगन्ये क इभक्ष मी श्री अय्भेवसः इ. ।।

विश्वभाद्वीय विश्व हान्य विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य गाउँकुताभवाकू नेव ने दर्दे । रू यमल ने यविष्यपंभव्रभम्भक्ते उउ मुविद्विष्रु भ व्यवामुभावित ४३ युद्वाउभागं प्राप्तिक्ष भुवद्विष्ट्या उज्ञामेश्रापुचसुरिध्वहरू० ह रलेयस भी भूली भन्न भवस्तु रूप उप लिलीवड लीवधडाडिक्ड्रेंसभुगार्स निवर्डे म्म उर्वथर्ण रहक महत्रभूत्रभ क्सिम वर्षभमित्रियाष्ट्रवेशकाढि कुमादि वडा द्रभभश्चिक्षत्रवाहिणी अश्चरहेवाणि ने निउभी एकंग्रमचभाइनभी बाउ छन्म क्षा हर अर्वियंग्राज्यभार्तित्वविष्ट उ भरेयहरू एसीनिश्वरूपंभवभीक्षेत्र म लीवर्त्र भुउद्दिन युचे पारियु ले भूल डा भक्षियनकण्यक्ष हुवेमुभकीएवडा =3 रीर्ड भेट कर देवर गण इसले दि गर्भागने

63

EN LEGISTUS

39.

र्येगीमात्रिभभगवुक्त । । अश्रुकाभीविश्यां देश विश्वास्त्र होत क्रांनिइभाषभिजिदिह इसायनिचाउर भए भुजीपन इसुम्बर्वे भक् मंड ए॰ उप विम्ने पिउड हैं र निर्म वस्तिः भवविद्यक्षितिष्ठेत्रभक्तिवावव युग्ग ५० ५५ वित्वया दिश्वी विनिधे विमेद्रनिः एल्लेललेबियुई थिउलभुरा भिवायम ४९ यहार नापरेलाडे यह ाण जापां भावभी वस्त्रनाभुगं छुनं उन्नु कि ह वणावी १३ वस्तानार्यस्थ्यद्वर नभग्रहनः यहारून हैं भग्ने वंडहू मेर्वणायेश भर डिद्यु स्मातः अत्वर्भ विद्वान सम्बन्धिय वित्र विद्वान सम्बन्धिय विद्वार विद्यार विद्यार विद्यार विद्यार विद्यार विद् हवणरवेडा ४५ चड्टा चाडिश्रमेल वर है मुश्रु इयभा भाषापुर नर भक्य इनुक इवणग्येज ४० 63

श्वापक्ष न सुद्र १ ध्व अपन स्वाप्त स्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त इन्अप्वर् न इवनुग्निरिनोपिताः भार उड्ड ज्ञभाषिनं वसुद्वया अप दिउः उषा इव गर्डक्क क्रीरेंभ दिविक पिने पर भन्न अलभक्ष्मधारामणभव्यभी बहुपगुल वकारं उन्न के हवया खेडी ५७ यहं भा हर्रेड्डिहर्स्ड । उन्हरू येनसंबंधि मंद्राधिउन्न क्रियाग्या १० श्रवभत्रन उंकृ धुरुवयत्राविमं लगा इक्रथ्क मर बिक्थ्उ अर्यभिष्डवर्ग २० खूराहिल क्रण्यक एक , भे उनका द्वन । उनुस्तर सिक्षरनर भड़्यभा ५९ ई क यु उन्न रुषि विष्युष्य भन्भने विक , वृत्य उद्भाव विष्ठ विष्ठ विष्ठ वे १०० भेव गंभिष्ठांनगं हिनमम् विगैक्य नश्चन

30

महाने हा उठा के प्रमुख्य के महाने के प्रमुख्य के प्रमुख्य के प्रमुख्य के महाने के प्रमुख्य क

S. A. State State

.हे.

दन्यम्यः दिवस्यः दवस्यः स्वाधः विकीध ७रा, इन्तुएभ्ये, इन्ग्राम्थ्राभुर्वे, इन्द्रकर्वे, तुउन्हें अक्षराची व्यक्त रामंदिहायी रामा चै। वालिभिधियाये। बनयवाभुये। बहुवर्षः वक्रवज्ञवसद्कृष्टें, हिंदुक्रवें, हिंसपुरें, हीस ये हत्र साया ये मुख्य ये हथ है। ही भना मचे ठवानकर्वे भक्षणवे किन्नुसरें शिश द्रम्ये इन्यये स्पिनित्रे ज्योभानाथे ह गवन्याचे । उवार्थे । उवार्थे ने । उवार्थे ने । उवार्थे ने विष्ठे । विष्ठे ने विष्ठे ने विष्ठे । विष्ठे ने विष्ठे ने विष्ठे ने विष्ठे । विष्ठे ने व क्रमर्के हमभूके स्मार्थिष्टे ॥ ५०० ॥स्म क्टें क्वान्टे की मण्डें की भण्डें क्यानकारें कीरियमें हगानिस्र रंगित्रयें भराम्रा वै.डगम्बन्ये ज्ञानभद्रक्ये भन्त्ये भन भूरायाँ भीरायाँ भीरक्षीर नानभाषाँ भद्रि उच्चे, भरिक्र राज् स्राची स्राक्षक्र नार्षे भग्रहें। सह्यपन्ये। सङ्घ्यान्यये। सद्युगर्ये। समस्यूर्वे अत्र श्रे सेन्क् क्लाखें, अक्षिण्ये भाउति है। भाउभद्भार भाष्ठ्य भाष्ठ्य भाष्ठ्य । भग्राप्तराचे भक्षराये प्रवण्ये वेमिश्विहे

वर्डीमार्च, युक्क के वस्तु महार वस्तु महार व मुख्नमचे यर चम्रिमारे दूनगरे ग्रम् ये विश्वित्ते युग्ये भएक्ये वक्रम्य य गञ्चर येग्ण क्षेत्रे येगीक्षे लग्ब नाय यह इ भर्रे वभक्त वक्ष्यक क्रियर्क रे स्ट्रेसरे अन्यया महारा रहारी रक्ष्यानारी रक्ष्य यै गरामार्थे शादा गरीका गर्भकारो श्वार्था गर्ने महिएहैं। श्रुवार ही भू ग्या । वेमार्डे रहा राष्ट्री सभविष्टि । राष्ट्र धियार्थे राष्ट्राक्षेत्रे रक्षार्थे स्वाप्तार्थे। नर्दित्ते नन्तिक्षा न्यासियां प्रभाग भारों चाउ इविज्ञें राश्चारी नक्षीनश्च लयानित्रः लेकेश्वरः लेकस्यो लाएकुच क्षणयें गुरु नर्जे नश्वकगरे जनाभाय न्क्रयो का विश्व के किया हैं निर्देश वे नक्षिपाये मिनपाये। र भागे १ । । राम्साना दे द्वार्य में की ्ये.लल्चे लक्ष्यकाभद्यक्य वर्ष राज्य नीरश्याची न्यायिष्टे नीरश्र ना राहे वीरमभुत्रे मिक्रियो स्रायुग्य स्म

भन्स•

बन्क्यें क्थन्यें क्थन्त्रहें वक्षा यं रेष्ट्रये क्ट्रक्ट विस्पिश्चर्ये रेभाउन हैं। वड्ड वड्ड वड्ड के बड़ के बड़ वड़ विश्व करें व्यन्त्रयो व्यभ्यारक्लामभाग्रे स्टाय् व ष्ट्या नगरिद्या । वसभादा वसहराष्ट्रा वर्षाया राष्ट्री वयश्चा वहरामारभारक वे समृद्रि यन्। महार्थे। मन्त्रालयः सम्बद्धलये। म उन्हें जाउनशन्ते मेर्थाये संकाश्क्ये स् व्यालयुनायं मचाये मचरामद्भाराभिष्टे ममद्भाषान्य । माइल उन्या प्रदिख्यो सम्बद्धः समीधनार्थः सकारुद्धापेग्र्यः थर्ड में इसीउभार्चे । थर्डे । धर्मार्थे। थकुनराचे भन्न मार्चे भन्न श्रुप्त थर्ग विभागाच्या , धरुष्टे, लग्रा, धरुष्टे, धरु कवानभेंद्रकृष्ण्य भगभउभुमा भवण्य भच्चार्चे, भर्वेडसायर्चे, भश्चे, भीउर्थे भर् भर्डे भगगग्ठवार विहैं समस्पापम् भनायां भागवाङ्गक्ये सम्क्रिल्यं स्पर्ध भगिक्ति, भग्भगांचे, भग्भवद्यल्खें, भट्टिशूवर्चे, भेभभाष्टें अउभुन्ये अउग्लक्ष्ये भनकृष्टे

チン

40 सन्तः

उडी हें हिन्हिन विभद्र र विभक्ष के हिन्दि । हिन्दि । अविगुः अद्युष्टि विज्ञेस्पाः अव्याग्यादितं ब्रुके उँ विनान तथा प्रकारत न मधा ए भर भी इ क्लिस्यम् अक्यक्षाद्धार्म्स्य स्थान भचन्यस्वतिक्वीरिकंग्नर्ताथाभा अच्छुक्र निविज्ञ सच्या हत्त्र यह भाग सचरिता िग्रवचेत्रती भ्रक्षभ्रधार्वे ने न भूभा कि स्वस्य, कल्पर रिमंड वर्षः नेवन्त्र शिविष्ठभा येथ क्रमभिष्टा के इंच्या भिष्ठ हु ने उडे भूपि। विकारिक देन सिस्ता ने युव्या कार्या सि ्राली गाँदियः स्वीविधारिकारिकारिक निक्रा प्रमेश र वास्ति वंद्र स्थान विकास कर्रिक अप्टर्क अद्येशियुन हिं त्याः अजनाः । चु भेक्स् विदिक्षंत ुहिचा पत्र विगेरी प्रमू ुं अः १ तन्त्र्याः है। जिसुद्धाः विश्वास्त्रियः । अस्ति । दशेष्ट्रियः है। जिसुद्धाः हो । अस्ति । श्याहरू हिन्स्येर् विक्रियर्थित नेलंडिस्थ्र इडिं हान्य होतेए कर दिस्प्ये क्र ना विश्वी क्रहर 'यान्त्र एक्षण विस्कालः ज्वम्मितिल द्वनिव्हितिभूक्ष्मिन वर्भव्यवसम्बद्ध

The Esert विन भेष्ठद्रभावित CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by

महरीयक्तमम्यू सुराष्ट्र उत्ती कुः किक उभक्श्रुची, नीलभीलिः, विक्कुडी, उसल्यार्ड, ई. म्भक्त है, एक बीहरून श्राः, को वर्ष है बेरे वर्षे अस्ति स्वाः अद्युस्ति स्वाद् बुरियद्वलः,श्रीराष्ट्रात्र्यद्वस्यभेवराष्ट्रात्र्यन ह्या अवभव्यभ्य अर्थित स्वात्रा का वाला म राष्ट्रा अक्षा स्था भी में से से से से से सि वन्ति हिंदे विवश्या विज्ञाति उत्ति हिंदा भावश् विश्वास्त्र विश्वाः भवश्वास्त्र । सव्या विशे भागों, पर्काः, भूगष्ठ भधायकः, कलः, कृष्णः लवे, अन्द्रः अज्ञेड्डः, ज्ञापः ज्ञाणः, विश्वज्ञारं, भ्रक्ली व वास्त्र, तिह्न सुर्हे सुनियं देश स्था हु अस्त हु के सुर्हे के सुर्हे के सुन्हें के स्था हु के सुर्हे के सुरहे के सुर्हे के सुर्ह ने हैं भिड़ाभाड़ भिड़ास दर्भ अने क्वारें। भूरण्यार्थ, इ भेज वर्गे दिविष्यमा विचाली क्रायन देशे. इंस इक्निकः। भरगाउः। व्यापाविद्याः बाजा द्वाचारायायालं, म्याभागु मार्वित म्, बाश्वरमभस्य दे। दवास्वरभद्रभद्रे। देवास् क्षेत्रभाष्ट्रम् । स्वाधिक क्ष्मित्र स्वाधिक क्ष्मित्र विद्यालय पार्यगड्ड वहर्ष भवाभवाशाशाः वज्वादमद्भम्। भटभटनभन्भ कारमध्यान पूर्वस्यानु यहियमा हता हता सनः भनः CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by eGangotri

कृत्वाधिकवृद्देविहः स्वाधानस्य स्वाधानस्य स्वाधानस्य कि हैं हमारी में एक ने निक्ति हैं। विन्दें किरिश्वाः व कृतिसी सर्वाप्रेडिशादिन करिं विश्वण प्रारः, मे थुः भवद्दि इसे उसः, गुरुः, ह निलः अनः थविदः अचक जनः, अवजः मह न्वण्रंभागः, रङ्ग्रह्यः, मङ्गी मङ्गर्दे वर्षः, गरामकानिमध्यः प्रविमभः स्वाल, विगणाः, भवभाष्यः, ललाएकि विश्वद्रिक करिल्य म् ब्लाभी अनुवारण भ विद्वात निवादिव वन्त्री भिष्ठाः, भवकुष्किः, निर्भवध्यः, विकः, व उद्भारत्य का सुज्ञ मं भगभा छिः, विस्त्री जिस्त्राम् स्राप्तिः विश्वति । विश्व यदा प्रसाद है गका बिरं हु हु। सुरोतवा ये वह ग्रायद्यास्य विद्वत्य प्रम्यः, उंश्रष्टेवस्थ म् मकः श्रेष्ट डिरंगग्राह्म भी हिंडी सेव अवश्रुष्ट भ यायक्षभाष्ट्रचन्नः उत्रहन्द्वभाष्ट्रविभुग्नः भूति भाग्रंबार, मिव भवं अवद्यं नामि के भिष्मित्री।

CC-0 Ayaz Rasool Nazki Sharada Collection. Digitzed by eGangotri





